वर्ष: 6 अंक: 02

16-31 जुलाई, 2025 (नि:शुल्क)

न्यू इंडिया समाचार

ऑपरेशन सिंधु

जब भी आई आपदा राष्ट्र ने निभाया साथ

जब भी कोई संकट आया या भारतीयों को मदद की जरूरत पड़ी, ऑपरेशन सिंधु हो या ऑपरेशन गंगा, ऐसे कई ऑपरेशन के जरिए भारत सरकार ने लोगों को बचाया और विश्व में बढ़ती राष्ट्र की शक्ति का भी कराया अहसास...

सामाजिक सुरक्षा लाभ चक्र से जुड़े 95 करोड़ भारतीय

हर महीने के आखिरी रविवार को रेडियो पर प्रसारित होने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम 'जन की बात' बन गई है। यहां सिर्फ शब्द नहीं होते, जन-जन से जुड़ा एक विश्वास होता है। यहां का संवाद और संकल्पों की श्रृंखला हर भारतवासी को प्रेरित करती है। इस कार्यक्रम में कभी विकास की कहानी होती है तो कभी आशा की लौ जलाई जाती है। 29 जून को पीएम मोदी ने संवाद सेतु 'मन की बात' की 123वीं कड़ी में कैलाश मानसरोवर यात्रा, सामूहिक संकल्प की ताकत के साथ ही अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, आपातकाल, विश्व पर्यावरण सहित कई मुद्दों पर की चर्चा। प्रस्तुत है मुख्य अंश...

- **कैलाश मानसरोवर :** लंबे समय के बाद कैलाश मानसरोवर यात्रा का फिर से शुभारंभ हुआ। हिंदू, बौद्ध, जैन, हर परंपरा में कैलाश को श्रद्धा और भक्ति का केंद्र माना गया है। अभी कुछ दिन पहले हमने भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा भी देखी है। जब हम श्रद्धा भाव से, पूरे समर्पण से और पूरे अनुशासन से अपनी धार्मिक यात्रा संपन्न करते हैं तो उसका फल भी मिलता है।

- **ट्रेकोमा मुक्त भारत :** 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने भारत को ट्रेकोमा मुक्त घोषित कर दिया है। यह उन लाखों लोगों की मेहनत का फल है, जिन्होंने बिना थके, बिना रुके, इस बीमारी से लड़ाई लड़ी। यह सफलता हमारे हेल्थ वर्कर की है। 'स्वच्छ भारत अभियान' से भी इसे मिटाने में बड़ी मदद मिली।

- **सामाजिक सुरक्षा लाभ:** हाल ही में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की बड़ी अहम रिपोर्ट आई है जिसमें कहा गया है कि भारत की 64% से ज्यादा आबादी को अब कोई-न-कोई सामाजिक सुरक्षा लाभ जरूर मिल रहा है। आज देश के करीब 95 करोड़ लोग किसी-न-किसी सामाजिक सुरक्षा योजना का लाभ पा रहे हैं। 2015 तक यह कवरेज 25 करोड़ से भी कम थी।

- **एकता और उम्मीद :** बोडोलैंड आज अपने एक नए रूप के साथ देश के सामने खड़ा है। यहां के युवाओं में जो ऊर्जा, आत्मविश्वास है, वो फुटबॉल के मैदान में सबसे ज्यादा दिखता है। बोडो टेरिटोरियल एरिया में बोडोलैंड सीईएम कप का आयोजन हो रहा है। यह सिर्फ एक टूर्नामेंट नहीं, ये एकता और उम्मीद का उत्सव बन गया है।

- **फिटनेस और मोटापा :** अगर हमें अपने सामर्थ्य का विस्तार करना है तो सबसे पहले हमें अपनी फिटनेस पर ध्यान देना होगा। फिट रहने और मोटापा कम करने के लिए मेरा एक सुझाव आपको याद है न। खाने में 10% तेल कम करो, मोटापा घटाओ। जब आप फिट होंगे, तो जीवन में और ज्यादा सुपर हिट होंगे।

- **एरी सिल्क :** मेघालय के एरी सिल्क को कुछ दिन पहले ही जीआई टैग मिला है। यह मेघालय के लिए एक धरोहर की तरह है। यहां की जनजातियों, खासकर खासी समाज के लोगों ने पीढ़ियों से इसे सहेजा और कौशल से समृद्ध किया है।

- **समाज की नई दिशा :** महिला के नेतृत्व में विकास का मंत्र भारत का नया भविष्य गढ़ने के लिए तैयार है। हमारी माता, बहन, बेटियां आज सिर्फ अपने लिए ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए नई दिशा बना रही हैं। आप देखिए, तेलंगाना के भद्राचलम की महिलाएं कभी खेतों में मजदूरी करती थीं। रोजी रोटी के लिए दिन-भर मेहनत करती थीं। आज वही महिलाएं, श्रीअन्न से बिस्कुट बना रही हैं।

- **भारत के प्रति आभार :** पिछले दिनों मुझे वियतनाम के बहुत से लोगों ने विभिन्न माध्यमों से अपने संदेश भेजे। इन संदेशों की हर पंक्ति में श्रद्धा थी, आत्मीयता थी। उनकी भावनाएं मन को छूने वाली थीं। वो लोग भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों के दर्शन कराने के लिए भारत के प्रति अपना आभार प्रकट कर रहे थे।

- **सामूहिक संकल्प की ताकत:** महाराष्ट्र में छत्रपति संभाजी नगर जिले के कार्बन न्यूट्रल पंचायत 'पाटोदा' ने शानदार मिसाल पेश की है। इस गांव में कोई अपने घर के बाहर कचरा नहीं फेंकता। गंदे पानी का ट्रीटमेंट होता है। छोटी-छोटी आदतें जब सामूहिक संकल्प बन जाती हैं, तो बड़ा बदलाव तय हो जाता है।

'मन की बात' पूरी सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

न्यू इंडिया
समाचार

वर्षः 6, अंकः 02 । 16-31 जुलाई, 2025

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा
प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

मुख्य सलाहकार संपादक
संतोष कुमार

सलाहकार संपादक
विभोर शर्मा

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक
पवन कुमार

सहायक सलाहकार संपादक
अखिलेश कुमार
चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन
सुमित कुमार (अंग्रेजी)
रजनीश मिश्रा (अंग्रेजी)
नदीम अहमद (उर्दू)

चीफ डिजाइनर
श्याम तिवारी

सीनियर डिजाइनर
फूलचंद तिवारी

डिजाइनर
अभय गुप्ता
सत्यम सिंह

13 भाषाओं में उपलब्ध न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने के लिए क्लिक करें।

https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

न्यू इंडिया समाचार के पुराने अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें

https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx

न्यू इंडिया समाचार के बारे में लगातार अपडेट के लिए फॉलो करें: @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर...

ऑपरेशन सिंधु
संकट में संकल्प का प्रतीक...

आवरण कथा
दुनिया में कहीं भी रहने वाला भारतीय, 'राष्ट्रदूत' जैसा होता है। नए भारत की इस सोच ने हर आपदा में अपने लोगों को बचाया है, हर संकट की घड़ी में सहायता और राहत प्रयासों का नेतृत्व भी किया है... | 24-37

अंतरिक्ष उड़ान
41 साल बाद अंतरिक्ष में भारत के शुभ कदम

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर कदम रख रचा नया इतिहास | 9-14

प्रधानमंत्री का विशेष आलेख
डिजिटल इंडिया का एक दशक

डिजिटल इंडिया एक आंदोलन है, जो सोच से सिस्टम तक, ग्रामीण से ग्लोबल तक, भारत को नई ऊंचाइयों तक ले जा रहा है | 6-8

समाचार सार | 4-5

व्यक्तित्व - धनराज पिल्लई
हॉकी का 'तूफान' | 15

बिहार के ज्ञानेंद्र को आयुष्मान भारत से मिला नया जीवन
पीएम मोदी ने लिखा पत्र, कहा- 'आपका स्वास्थ्य, हमारा संकल्प' | 16-17

केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णयः ELI से मिलेंगे 3.5 करोड़ रोजगार
1 लाख करोड़ रुपये से मिलेगा रिसर्च को बढ़ावा | 38-39

बिहार की समृद्धि से देश की समृद्धि
पीएम मोदी ने बिहार को दी 5,200 करोड़ रुपये से अधिक की सौगातें | 40-41

ओडिशा...भारत की विरासत का दिव्य सितारा
पीएम मोदी ने ओडिशा को दीं 18,000 करोड़ रु. से ज्यादा की सौगातें | 42-43

जी-7 में भारत की कूटनीतिक धमक, दुनिया से भारत का आह्वान
आतंकवाद के खिलाफ एकजुट हो विश्व | 44-47

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की 5वीं वर्षगांठ
मूल्य आधारित नागरिक निर्माण का आधार | 48-52

11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
शांति, स्वास्थ्य और समरसता का 'योग'
11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के जरिए दुनिया ने देखी भारत की सांस्कृतिक ताकत | 18-23

प्रकाशक और मुद्रकः कंचन प्रसाद, महानिदेशक, सीबीसी (केंद्रीय संचार ब्यूरो)। **मुद्रणः** जेके ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा. लि., बी-278, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज-1, नई दिल्ली-110020। **पत्राचार और ईमेल के लिए पताः** कमरा संख्या-316, नेशनल मीडिया सेंटर, रायसिना रोड, नई दिल्ली- 110001। **ईमेल-** response-nis@pib.gov.in आर. एन. आई. नंबर DELHIN/2020/78812

संपादक की कलम से...

संकट के बीच दुनिया में कहीं भी फंसे हों नागरिक, भारत है तैयार

सादर नमस्कार।

बीते दशक में भारत ने वैश्विक मंच पर न केवल अपनी आर्थिक और कूटनीतिक ताकत का लोहा दुनिया को मनवाया है, बल्कि संकट की घड़ी में अपने नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने के दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित किया है। क्योंकि, दुनिया के किसी भी देश में मौजूद हर भारतीय नागरिक सिर्फ राष्ट्र दूत ही नहीं, बल्कि देश के लिए अमूल्य भी है। दूसरे देशों में रह रहे भारतीयों की चिंता, उनका कल्याण और सुरक्षा आज नए भारत की विदेश नीति के केंद्र में है। यही कारण है कि चाहे कहीं प्राकृतिक आपदा आए या अंदरूनी-बाहरी संघर्ष के कारण अस्थिरता हो, नए भारत ने अपने नागरिकों को सुरक्षित सकुशल स्वदेश लाकर स्पष्ट संदेश दिया है- प्रत्येक भारतीय महत्वपूर्ण है।हर भारतीय की सुरक्षित स्वदेश वापसी के लिए केंद्र सरकार कटिबद्ध है। इजराइल-ईरान संघर्ष के दौरान इन दोनों देश में फंसे भारतीय छात्र और नागरिकों की सुरक्षित स्वदेश वापसी के साथ भारत सरकार ने फिर एक बार अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। आपको याद होगा कि इससे पहले भी रूस-यूक्रेन युद्ध के समय यूक्रेन में रहने वाले भारतीय नागरिकों के लिए जीवनदायी मिशन 'ऑपरेशन गंगा' चलाकर 20 हजार से अधिक लोगों की सकुशल वापसी कराई गई थी।

यही नहीं, भारत ने अपनी परंपराओं का पालन करते हुए अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को भी निभाया है। दुनिया में कहीं भी कोई आपदा आई तो भारत ने प्रभावितों का साथ निभाया है। यही कारण है कि आज नए भारत के नेतृत्व के प्रति भारतीय नागरिकों का आत्मविश्वास बढ़ा है। अब यह विश्वास हो गया है कि दुनिया में वे कहीं भी हों, वह सुरक्षित हैं, क्योंकि वह भारत के नागरिक हैं। नया भारत किस तरह अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए तत्पर है, यही इस बार के अंक की आवरण कथा बनी है।

इसके अलावा डिजिटल इंडिया के एक दशक पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विशेष आलेख, व्यक्तित्व की कड़ी में भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान धनराज पिल्लई, केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 5 वर्ष पूरे होने पर विशेष सामग्री, 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित समारोह शामिल है। वहीं एक्सिओम-4 मिशन में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचकर इतिहास रचने वाले शुभांशु शुक्ला की यात्रा और उनसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बातचीत के साथ ही प्रधानमंत्री के पखवाड़े भर के कार्यक्रमों को शामिल किया गया है।

पत्रिका के इनसाइड पेज पर मन की बात और बैक कवर पर 23 जुलाई को मनाए जाने वाले प्रसारण दिवस को समाहित किया गया है।

आप अपना सुझाव हमें भेजते रहिए।

(धीरेन्द्र ओझा)

हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

आपकी बात...

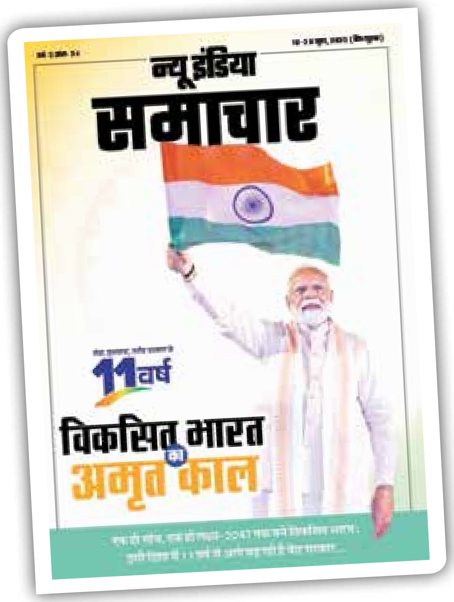

देशप्रेम की प्रेरणा है न्यू इंडिया समाचार पत्रिका

मैं न्यू इंडिया समाचार पत्रिका के सभी अंकों को पढ़ता हूं क्योंकि न्यू इंडिया समाचार पत्रिका के प्रत्येक अंक से देशप्रेम की भावना को बल मिलता है। पत्रिका में प्रकाशित होने वाले लेख से देश के प्रति सेवा एवं निष्ठा की भावना बढ़ती है! न्यू इंडिया समाचार पत्रिका सीमा पर तैनात जवान, देश के किसान, युवा एवं माता-बहनों के साथ बुजुर्गों की सेवा का रूप है।

बिन्दुसार पाण्डेय

bindusarpandey11@gmail.com

समसामयिक घटनाओं से अपडेट रखती है न्यू इंडिया समाचार पत्रिका

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका के प्रतिष्ठित प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद। यह मुझे समसामयिक घटनाओं से अपडेट रखती है। साथ ही इसकी भाषा समझने में आसान है। मैंने यह पत्रिका ऑनलाइन पढ़ी है। मुझे यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है।

priyanka30mehra@gmail.com

बेहतरीन पत्रिका है न्यू इंडिया समाचार

इस पत्रिका के माध्यम से सभी सरकारी योजनाओं से अपडेट रहने में मदद मिलती है। यह एक बेहतरीन पत्रिका है। इसमें प्रकाशित जानकारी बहुत उपयोगी है और हमें देश-विदेश में चल रही घटनाओं के बारे में भी सूचना प्रदान करती है।

सीरापु श्रीनिवासराव

ssraoreporter@gmail.com

प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में मिल रही है बहुत मदद

मैं काफी समय से न्यू इंडिया समाचार पत्रिका पढ़ रहा हूं। इस पत्रिका से प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में बहुत मदद मिल रही है। सरकारी योजनाओं के बारे में गहन जानकारी के साथ-साथ व्यक्तित्वों का एक प्रामाणिक विवरण कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो इसे विशिष्ट बनाती हैं। यही वजह है कि आगामी संस्करणों के लिए उत्सुकता हमेशा बनी रहती है।

niranjan.s1953@gmail.com

काफी उपयोगी लगी न्यू इंडिया समाचार पत्रिका

हाल ही में मुझे सरकार की पाक्षिक न्यू इंडिया समाचार पत्रिका के बारे में पता चला और इसके महत्व के बारे में समझ सका। पत्रिका की उत्कृष्ट सामग्री, समसामयिकी लेखन और मुद्रण मुझे काफी उपयोगी लगी। पत्रिका में सरकार की योजना और नीतियों को विशेष रूप से प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका भारत की प्रगति को लेकर विश्वास पैदा करता है।

yaazhiniskm@gmail.com

पत्राचार और ईमेल के लिए पता: कमरा संख्या-316, नेशनल मीडिया सेंटर, रायसिना रोड, नई दिल्ली- 110001
ईमेल- response-nis@pib.gov.in

न्यू इंडिया समाचार को आकाशवाणी के एफएम गोल्ड पर हर शनिवार-रविवार को दोपहर 3:00 से 3:15 बजे तक सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

त्रिपुरा बना पूर्ण साक्षरता हासिल करने वाला देश का तीसरा राज्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के बाद पूर्वोत्तर के लिए एक सुखद खबर सामने आई है। मिजोरम और गोवा के बाद अब त्रिपुरा देश का तीसरा पूर्ण साक्षर राज्य बन गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत गैर साक्षर युवाओं के साथ 15 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को मूलभूत साक्षरता, गणितीय गणना व महत्वपूर्ण जीवन कौशल सिखाने के लिए शुरू की गई उल्लास योजना का असर है कि 1961 में 20.24% साक्षरता दर वाले त्रिपुरा में अब साक्षरता 95.6% पहुंच गई है। बता दें कि 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के बीच 95 प्रतिशत साक्षरता के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित मानक के अनुसार पूर्ण साक्षर के रूप में मान्यता दी गई है। इसी के साथ केंद्र सरकार के 'उल्लास-नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' (न्यू इंडिया लिटरेसी प्रोग्राम) के तहत राज्य को पूर्ण साक्षरता का दर्जा दिया गया है।

कौशल विकास की नई पहल 'नव्या' से किशोरियां होंगी सशक्त

किशोरियों को सशक्त बनाने और 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) के साथ मिलकर 'नव्या' (युवा किशोरियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण के जरिए आकांक्षाओं का पोषण) पहल की शुरुआत की है। नव्या कार्यक्रम का मकसद 16-18 वर्ष की किशोरियों को मुख्य रूप से गैर-पारंपरिक और उभरते हुए क्षेत्रों में रोजगार के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। पायलट चरण में नव्या को पूर्वोत्तर के 27 और 112 आकांक्षी जिलों में शुरू किया जा रहा है जिसमें 19 राज्य कवर हैं। कार्यक्रम के तहत किशोरियों को ग्राफिक डिजाइन, दूरसंचार, वित्तीय सेवाएं, स्मार्टफोन, ड्रोन असेंबली, सोलर पीवी, सीसीटीवी इंस्टॉलेशन और हाथ की कढ़ाई जैसे कौशल से प्रशिक्षित करने का निर्णय लिया गया है। प्रत्येक भागीदार जिले में किशोरियों की जरूरतों के हिसाब से नौकरी-भूमिका-विशिष्ट व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रदान करने वाले प्रशिक्षण केंद्र बनाए गए हैं।

ट्रेन प्रस्थान के आठ घंटे पहले आरक्षण चार्ट तैयार करने की योजना

देश भर में ट्रेन से यात्रा करने वाले यात्रियों की सुविधा को देखते हुए केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक अहम निर्णय लिया है। रेल मंत्री ने रेलवे बोर्ड को निर्देश दिया है कि ट्रेन के प्रस्थान से आठ घंटे पहले आरक्षण चार्ट तैयार करने की पहल को चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाए। इस व्यवस्था से प्रतीक्षा सूची के टिकट वाले यात्रियों की अनिश्चितता में कमी आएगी। साथ ही प्रतीक्षा सूची में टिकट कंफर्म नहीं होने की स्थिति में यात्रियों को वैकल्पिक प्रबंध करने का और समय मिल जाएगा। बताया गया है कि दोपहर दो बजे के पहले प्रस्थान करने वाले ट्रेनों के लिए चार्ट पिछले दिन रात नौ बजे तक तैयार किया जाना चाहिए। टिकटिंग प्रणाली स्मार्ट, पारदर्शी, सुगम और कुशल होनी चाहिए। रेलवे टिकट बुकिंग को आसान बनाने के लिए कई कदम उठा रहा है। नई उन्नत आधुनिक यात्री आरक्षण प्रणाली वर्तमान लोड से दस गुना अधिक लोड निपटाने के लिए तैयार की गई है।

अब तीन हजार रुपये में वार्षिक फास्ट टैग

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से जनता को एक बड़ी राहत दी गई है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने राष्ट्रीय राजमार्ग पर यात्रा के लिए वार्षिक फास्ट टैग देने की घोषणा की है। इसकी कीमत महज 3,000 रुपये होगी। 15 अगस्त से इस फैसले को देशभर में लागू कर दिया जाएगा। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बताया कि वार्षिक फास्ट टैग की कीमत तीन हजार रुपये होगी। इससे वर्ष में 200 ट्रिप (एक टोल एक ट्रिप के बराबर) कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से राष्ट्रीय राजमार्ग पर अपनी गाड़ी से सफर करने वाले लोगों को कम से कम साल में 7,000 रुपये की बचत होगी। इस निर्णय के बाद एक टोल पर औसतन 15 रुपये ही टोल देना होगा। यह सुविधा सिर्फ राष्ट्रीय राजमार्ग के लिए होगी। राज्य के राजमार्ग पर यह लागू नहीं होगी।

ईपीएफओ ने निपटान सीमा एक लाख से बढ़ाकर 5 लाख रु. किया

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने सदस्य कर्मचारियों के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। ईपीएफओ ने अग्रिम दावों के लिए ऑटो-सेटलमेंट की सीमा को मौजूदा एक लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये करने का निर्णय लिया है। इस कदम से लाखों ईपीएफओ सदस्यों को खासकर तत्काल जरुरत के समय जल्दी धन प्राप्त करने में मदद मिलेगी। वित्त वर्ष 2024-25 में ईपीएफओ ने ऑटो-सेटलमेंट के माध्यम से रिकॉर्ड 2.34 करोड़ अग्रिम दावों को सफलतापूर्वक निपटान किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 161% ज्यादा है। इस वृद्धि को जारी रखते हुए वित्त वर्ष 2025-26 के पहले ढाई महीनों में ईपीएफओ ने 76.52 लाख दावों का स्वत: निपटान कर दिया है, जो अब तक निपटाए गए सभी अग्रिम दावों का लगभग 70% है।

यूपीएस का विकल्प चुनने के लिए 3 महीने और बढ़ाई तारीख

सरकारी कर्मचारियों के लिए स्थिरता, सम्मान और वित्तीय सुरक्षा के उद्देश्य के साथ शुरू की गई एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) के लिए अब 30 सितंबर 2025 तक आवेदन किया जा सकता है। पहले इसके लिए 30 जून 2025 तक विकल्प चुनने का अवसर दिया गया था। विभिन्न हितधारकों की ओर से कट-ऑफ तिथि आगे बढ़ाने के अनुरोध के बाद वित्त मंत्रालय ने इसे 3 महीने और बढ़ाने का निर्णय लिया है। यूपीएस के तहत केंद्र सरकार के कर्मचारियों को सेवानिवृति के बाद एक निश्चित पेंशन प्रदान की जाती है। इसे 24 फरवरी 2024 को शुरू किया गया था। अब मौजूदा पात्र कर्मचारी, पूर्व सेवानिवृत कर्मचारियों और दिवंगत पूर्व सेवानिवृत कर्मचारी के कानूनी रूप से विवाहित जीवनसाथियों के लिए यूपीएस का विकल्प चुनने की कट-ऑफ तारीख बढ़ाई गई है। ■

डिजिटल इंडिया का एक दशक

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

एक दशक पहले हमने असंभव सा लगने वाला सपना देखा...भारत को डिजिटल शक्ति बनाना। *यह सिर्फ टेक्नोलॉजी नहीं, एक सोच थी कि हर नागरिक, चाहे कहीं भी हो, टेक्नोलॉजी से जुड़कर सशक्त बन सकता है। आज डिजिटल इंडिया एक आंदोलन है, जो सोच से सिस्टम तक, ग्रामीण से ग्लोबल तक, भारत को नई ऊंचाइयों तक ले जा रहा है...*

देश में आज 42 लाख किलोमीटर से ज्यादा ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछी है, जो पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी से 11 गुना ज्यादा है

दस साल पहले, हमने बहुत दृढ़ विश्वास के साथ अज्ञात क्षेत्र में एक साहसिक यात्रा शुरू की। दशकों तक भारतीयों की टेक्नोलॉजी का उपयोग करने की क्षमता पर संदेह किया जाता रहा, हमने इस अप्रोच को बदल दिया। भारतीयों की टेक्नोलॉजी का उपयोग करने की क्षमता पर भरोसा किया, जबकि दशकों तक यह सोचा जाता रहा कि टेक्नोलॉजी के उपयोग से संपन्न और वंचित के बीच की खाई और गहरी हो जाएगी। हमने इस मानसिकता को बदल दिया और संपन्न एवं वंचित के बीच की खाई को खत्म करने के लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग किया।

जब इरादा सही हो तो इनोवेशन कम सशक्त लोगों को सशक्त बनाता है। जब सोच समावेशी होती है, तो टेक्नोलॉजी हाशिये पर रहने वालों के जीवन में बदलाव लाती है। इस विश्वास ने डिजिटल इंडिया की नींव रखी। यह पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने, समावेशी डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण करने और सभी के लिए अवसर प्रदान करने का मिशन है। 2014 में इंटरनेट की पहुंच सीमित थी, डिजिटल साक्षरता कम थी और सरकारी सेवाओं तक ऑनलाइन पहुंच दुर्लभ थी। कई लोगों को संदेह था कि क्या भारत जैसा विशाल और विविधतापूर्ण देश वास्तव में डिजिटल हो सकता है।

आज, उस सवाल का जवाब न केवल डेटा और डैशबोर्ड में है,

डीबीटी से 44 लाख करोड़ रुपये ट्रांसफर, बिचौलिये हटे, 3.48 लाख करोड़ रुपये की लीकेज की बचत हुई

बल्कि 140 करोड़ भारतीयों के जीवन में भी है। हम कैसे कैसे सीखते हैं, लेनदेन करते हैं और कैसे निर्माण करते हैं, डिजिटल इंडिया हर जगह है।

डिजिटल खाई को पाटना

2014 में भारत में करीब 25 करोड़ इंटरनेट कनेक्शन थे। आज यह संख्या बढ़कर 97 करोड़ से ज्यादा हो गई है। 42 लाख किलोमीटर से ज्यादा ऑप्टिकल फाइबर केबल, जो पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी से 11 गुना ज्यादा है, अब सबसे दूरदराज के गांवों को भी जोड़ती है। भारत में 5जी की शुरुआत दुनिया में सबसे तेज गति से हुई है, जहां सिर्फ दो साल में 4.81 लाख बेस स्टेशन स्थापित किए गए हैं। हाई-स्पीड इंटरनेट अब शहरी केंद्रों के साथ ही गलवान, सियाचिन और लद्दाख सहित अग्रिम सैन्य चौकियों तक पहुंच गया है।

इंडिया स्टैक, जो हमारी डिजिटल रीढ़ है, ने यूपीआई जैसे प्लेटफॉर्म को सक्षम किया है, जो अब सालाना 100 बिलियन से ज्यादा लेनदेन को संभालता है। सभी वास्तविक समय के डिजिटल लेनदेन में से लगभग आधे भारत में होते हैं। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के माध्यम से, 44 लाख करोड़ से अधिक सीधे नागरिकों को ट्रांसफर किए गए हैं। बिचौलियों को हटाया गया है और 3.48 लाख करोड़ की लीकेज की बचत हुई है।

स्वामित्व जैसी योजनाओं ने 2.4 करोड़ से अधिक संपत्ति कार्ड जारी किए हैं और 6.47 लाख गांवों की मैपिंग की है, जिससे भूमि से संबंधित अनिश्चितता का अंत हुआ है।

सभी के लिए अवसर का लोकतंत्रीकरण

भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था एमएसएमई और छोटे उद्यमियों को पहले से कहीं ज्यादा सशक्त बना रही है। ONDC (डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क) एक क्रांतिकारी प्लेटफॉर्म है, जो खरीदार और विक्रेताओं के विशाल बाजार के साथ सहज कनेक्शन प्रदान करके अवसरों की एक नई खिड़की खोलता है। गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (जेम) आदमी को सरकार के सभी अंगों को सामान और सेवाएं बेचने में सक्षम बनाता है। यह न केवल आम आदमी को एक विशाल बाजार के साथ सशक्त बनाता है बल्कि सरकार के लिए पैसे भी बचाता है।

कल्पना कीजिए, आप मुद्रा लोन के लिए ऑनलाइन

आवेदन करते हैं। अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क के जरिए आपकी क्रेडिट योग्यता का मूल्यांकन किया जाता है। आपको अपना लोन मिल जाता है और आप अपना उद्यम शुरू कर देते हैं। आप जेम पर रजिस्टर होते हैं, स्कूल और अस्पतालों को सप्लाई करते हैं और फिर ONDC के ज़रिए आगे बढ़ते हैं। ONDC ने हाल ही में 200 मिलियन ट्रांजेक्शन को पार कर लिया है, जिसमें से आखिरी 100 मिलियन ट्रांजेक्शन सिर्फ छह महीनों में हुए हैं। बनारसी बुनकरों से लेकर नागालैंड के बांस कारीगरों तक, विक्रेता अब बिना किसी बिचौलिए या डिजिटल एकाधिकार के, पूरे देश में ग्राहकों तक पहुंच रहे हैं। जेम ने 50 दिनों में 1 लाख करोड़ सकल व्यापारिक मूल्य को भी पार कर लिया है। इसमें 1.8 लाख से अधिक महिला नेतृत्व वाले एमएसएमई सहित 22 लाख विक्रेताओं ने 46,000 करोड़ के ऑर्डर पूरे किए हैं।

डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर: भारत की ग्लोबल ऑफरिंग

आधार, कोविन, डिजीलॉकर और फास्टैग से लेकर पीएम-वाणी और वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन तक भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) को अब वैश्विक स्तर पर अध्ययन और अपनाया जा रहा है। कोविन ने दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान को सक्षम बनाया, 220 करोड़ QR-verifiable प्रमाणपत्र जारी किए। 54 करोड़ यूजर के साथ डिजीलॉकर 775 करोड़ से अधिक दस्तावेज को सुरक्षित और निर्बाध रूप से होस्ट करता है। जी-20 प्रेसीडेंसी के माध्यम से, भारत ने ग्लोबल डीपीआई रिपॉजिटरी और 25 मिलियन डॉलर का सोशल इम्पैक्ट फंड लॉन्च किया, जिससे अफ्रीका और दक्षिण एशिया के देशों को समावेशी डिजिटल इकोसिस्टम अपनाने में मदद मिली।

स्टार्टअप पावर और आत्मनिर्भर भारत का संगम

भारत अब दुनिया के शीर्ष 3 स्टार्टअप इकोसिस्टम में शुमार है, जहां 1.8 लाख से ज्यादा स्टार्टअप हैं। यह सिर्फ स्टार्टअप मूवमेंट से कहीं ज्यादा है, यह एक तकनीकी पुनर्जागरण है। जब बात युवाओं में एआई स्किल की आती है तो भारत बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। 1.2 बिलियन डॉलर के इंडिया एआई मिशन के माध्यम से, भारत ने 34,000 जीपीयू तक वैश्विक स्तर पर 1 डॉलर/जीपीयू प्रति घंटे से भी कम कीमत पर पहुंच को सक्षम किया है, जिससे भारत न केवल सबसे किफायती इंटरनेट अर्थव्यवस्था बन गया है, बल्कि सबसे किफायती कंप्यूट डेस्टिनेशन भी बन गया है। भारत ने मानवता के लिए एआई के सबसे पहले उपयोग का समर्थन किया है। एआई पर नई दिल्ली डिक्लरेशन जिम्मेदारी के साथ इनोवेशन को बढ़ावा देता है। हम पूरे देश में एआई सेंटर फॉर एक्सीलेंस स्थापित कर रहे हैं।

आगे की राह

अगला दशक और भी अधिक परिवर्तनकारी होगा। हम डिजिटल गवर्नेंस से ग्लोबल डिजिटल नेतृत्व की ओर, इंडिया फर्स्ट से इंडिया फॉर द वर्ल्ड की ओर बढ़ रहे हैं। डिजिटल इंडिया, केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं रह गया है, यह लोगों का आंदोलन बन गया है। यह एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण और भारत को दुनिया के लिए एक विश्वसनीय इनोवेशन भागीदार बनाने के लिए अहम है।

सभी इनोवेटर्स, उद्यमियों और सपने देखने वालों के लिए: दुनिया अगली डिजिटल सफलता के लिए भारत की ओर देख रही है।

आइए, हम वह बनाएं, जो सशक्त करे।

आइए, हम वह हल करें, जो वास्तव में मायने रखता है।

आइए, हम ऐसी तकनीक से नेतृत्व करें जो जोड़ती है, सबको साथ लाती है और सबका उत्थान करती है।

41 साल बाद अंतरिक्ष में भारत के शुभ कदम

केरल के थुंबा में एक गांव से साउंडिंग रॉकेट प्रक्षेपण के साथ शुरू हुई भारत की अंतरिक्ष यात्रा के बारे में शायद ही किसी ने सोचा होगा कि एक दिन देश उन ऊंचाइयों को भी छू सकेगा, जो उस वक्त सिर्फ कल्पनाओं में ही थीं। सफलता की इस यात्रा में एक अहम पड़ाव 1984 में आया, जब विंग कमांडर राकेश शर्मा ने सोवियत संघ के सोयूज टी-11 अभियान के साथ अंतरिक्ष में कदम रखा। अब 41 साल बाद 140 करोड़ भारतीयों का सपना लेकर एक्सिओम-4 मिशन के साथ ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर कदम रख रचा नया इतिहास...

भारत की पहली स्वदेशी मानव अंतरिक्ष उड़ान गगनयान के ठीक पहले एक्सिओम-4 मिशन के साथ 26 जून को ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर कदम रखने वाले पहले भारतीय बने। यह मिशन 25 जून को भारतीय समयानुसार दोपहर करीब 12:00 बजे अमेरिका के फ्लोरिडा में नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च किया गया। स्पेसएक्स के फाल्कन-9 रॉकेट से जुड़े ड्रैगन कैप्सूल में सभी एस्ट्रोनॉट ने उड़ान भरी। ये स्पेसक्राफ्ट करीब 28.5 घंटे के बाद 26 जून की शाम को 4:30 बजे इंटनेशनल स्पेस स्टेशन से जुड़ गया। एक्सिओम मिशन-4 (एएक्स-4) एक ऐसा निजी अंतरिक्ष मिशन है जो नासा, इसरो और स्पेसएक्स के सहयोग से संचालित किया जा रहा है।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु इसके मिशन पायलट हैं। इसरो के अनुसार, शुभांशु का ये अनुभव भारत के गगनयान मिशन में काम आएगा। ये भारत का पहला मानव अंतरिक्ष मिशन है, जिसका उद्देश्य भारतीय गगनयात्रियों को पृथ्वी की निचली कक्षा में भेजना और सुरक्षित रूप से वापस लाना है। उनके साथ नासा की पूर्व अंतरिक्ष यात्री और मिशन कमांडर अमेरिका की पैगी व्हिटसन, पोलैंड के स्लावोस्ज अजनान्सकी व हंगरी के टिबोर कापू भी मिशन का हिस्सा बने। मिशन लॉन्च होते ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बधाई देते हुए कहा कि भारतीय अंतरिक्ष यात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला अपने साथ 1.4 अरब भारतीयों की इच्छाओं, आशाओं और आकांक्षाओं के साथ इस अभियान पर हैं।

कंधे पर तिरंगा लगाए अंतरिक्ष में पहुंचे शुभांशु, बोले- यह भारत के मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत

एक्सिओम-4 मिशन में ग्रुप कैप्टन शुभांशु ने तिरंगे को अपने कंधे पर लगाया। उड़ान भरने के बाद ड्रैगन यान से हिंदी में संदेश देते हुए उन्होंने कहा, "नमस्कार प्यारे देशवासियों, यह कमाल की राइड थी। मेरे कंधे पर तिरंगा मुझे बताता है कि मैं आप सभी के साथ हूं। यह भारत के मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत है। मैं चाहता हूं कि आप सभी इसका हिस्सा बनें। आपका सीना भी गर्व से चौड़ा होना चाहिए। जय हिंद, जय भारत।"

गगनयान की खुलेगी राह

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत ने एक्सिओम मिशन के लिए 500 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च किए हैं। भारत के पहले मानव अंतरिक्ष अभियान गगनयान के लिए यह मिशन बेहद महत्वूपर्ण हैं, इसके लिए जिन चार अंतरिक्ष यात्रियों को चुना गया है, ग्रुप कैप्टन शुभांशु उनमें से एक हैं। इस मिशन की सफलता के साथ भारत, अमेरिका, रूस और चीन के साथ चौथा देश बन जाएगा। शुभांशु को इस मिशन पर भेजना भारत की इसी योजना का हिस्सा है।

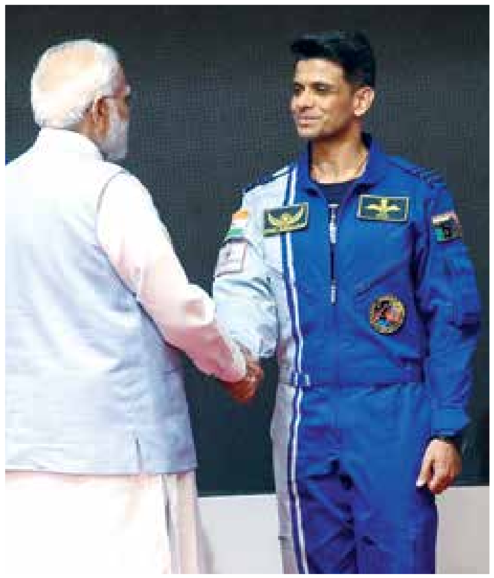

गगनयान मिशन की टीम में शामिल होने पर ग्रुप कैप्टन शुभांशु को पीएम मोदी ने खुद दी थी बधाई।

एक्सिओम-4 मिशन लॉन्च को लाइव देखते ग्रुप कैप्टन शुभांशु के पिता शंभू दयाल शुक्ला, मां आशा शुक्ला और बहन निधि शुक्ला। खुशी से छलके आंसू, लहराया तिरंगा।

अंतरिक्ष में भारत के प्रयोगों को नई दिशा

मिशन के अनुसंधान पोर्टफोलियों में 30 देश से जुड़े करीब 60 वैज्ञानिक अध्ययन और प्रयोग शामिल हैं। परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह के अनुसार, ग्रुप कैप्टन शुक्ला अपने साथ स्वदेशी प्रयोग किट लेकर गए हैं, जिन्हें आईआईटी, आईआईएससी और जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) जैसे अग्रणी भारतीय संस्थानों द्वारा बनाया गया है। मिशन इन किटों की मदद से ग्रुप कैप्टन शुभांशु के हिस्से अंतरिक्ष में खेती, काई, कठिन हालात में जीवाश्म सुरक्षा, शून्य गुरुत्वाकर्षण में अंतरिक्ष यात्रियों की मांसपेशियों में कमजोरी, आंखों पर प्रभाव यूरिया व नाइट्रेट में सायनोबैक्टीरिया का इस्तेमाल और अलग-अलग फसलों की गुणवत्ता से संबंधित प्रयोग हैं। शुभांशु शुक्ला द्वारा किए जाने वाले सभी प्रयोग भारतीय संस्थानों ने स्वदेशी रूप से विकसित किए हैं। इन प्रयोगों से प्राप्त परिणामों को बाकी दुनिया के साथ साझा किया जाएगा।

अंतरिक्ष में नई गाथा लिखने की राह पर भारत

"अंतरिक्ष में जब भारत का कोई रॉकेट जाता है तो वह अपने साथ सिर्फ पेलोड नहीं, बल्कि 140 करोड़ देशवासियों का सपना भी ले जाता है।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यह शब्द भारत के अंतरिक्ष विकास कार्यक्रम के लिए उस प्रतिबद्धता की निशानी है, जिसे 2014 में एक नई गति मिली। ऑटो के सफर से भी कम किराए में मंगल तक पहुंच कर भारत ने नया इतिहास रचा तो साथ ही चंद्रयान-3 के साथ चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बना।

- जनवरी 2015 से दिसंबर 2024 तक पिछले दस वर्ष के दौरान, इसरो के पीएसएलवी, एलवीएम3 और एसएसएलवी लॉन्च वाहनों पर वाणिज्यिक आधार पर कुल 393 विदेशी उपग्रह और 3 भारतीय ग्राहक उपग्रह लॉन्च किए गए हैं।
- 'भारत ने अब तक 34 देश के उपग्रह लॉन्च किए हैं, जिनमें 2014 से विकसित देशों के उपग्रह भी शामिल हैं- संयुक्त राज्य अमेरिका (232), यूनाइटेड किंगडम (83), सिंगापुर (19), कनाडा (8), कोरिया (5) लक्जमबर्ग (4), इटली (4), जर्मनी (3), बेल्जियम (3), फिनलैंड (3), फ्रांस (3), स्विट्जरलैंड (2) नीदरलैंड (2), जापान (2), इजराइल (2), स्पेन (2), ऑस्ट्रेलिया (1), संयुक्त अरब अमीरात (1), ऑस्ट्रिया (1), अन्य (8)।
- 15 फरवरी 2017 को, इसरो ने एक ही मिशन में 104 उपग्रहों को लॉन्च किया- एक विश्व रिकॉर्ड, जो अब तक नहीं टूटा है।
- फरवरी, 2017 में आदित्य एल-1 के साथ भारत ने अपना पहला सौर मिशन लॉन्च किया था।
- वर्ष 2035 तक अंतरिक्ष में भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (बीएएस) की स्थापना और 2040 तक भारतीय चालक दल के साथ चंद्रमा पर उतरना भारत के लक्ष्य में शामिल है।

भारत की पहली स्वदेशी मानव अंतरिक्ष उड़ान

गगनयान कार्यक्रम को लगभग 20,193 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ मंजूरी दी गई है। यह भारत की पहली स्वदेशी मानव अंतरिक्ष उड़ान पहल है। इसका उद्देश्य भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को पृथ्वी की निचली कक्षा (एलईओ) में भेजना है, जो अधिक उन्नत मिशनों की आधारशिला रखेगा। भारतीय वायुसेना के चार पायलटों को इस मिशन के लिए चुना गया है। इनमें ग्रुप कैप्टन पीबी नायर, ग्रुप कैप्टन अजीत कृष्णन, ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप और ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला शामिल हैं। सब कुछ ठीक रहा तो 2027 की पहली तिमाही में भारत का यह पहला मानव अंतरिक्ष यान लॉन्च किया जाएगा।

सुधारों ने मजबूत की भारत की अंतरिक्ष यात्रा

अंतरिक्ष क्षेत्र में 2014 के बाद शुरु हुए सुधारों ने अंतरिक्ष में भारत को एक मजबूत खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने में अहम योगदान दिया है। इसके तहत अंतरिक्ष क्षेत्र में 100 फीसदी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की राह खोली गई। वर्ष 2013-14 के मुकाबले 2025-26 तक भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के बजट में तीन गुना बढ़ोतरी की गई। 2020 में इन-स्पेस की स्थापना के साथ अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोला गया तो 2023 में अंतरिक्ष नीति के साथ भारत के भविष्य के लक्ष्य निर्धारित किए गए। इससे इनोवेशन का नया रास्ता तैयार हुआ। इसी का असर है कि हाल के वर्षों में 328 से अधिक अंतरिक्ष स्टार्टअप उभरे हैं।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम उस ऐतिहासिक मोड़ पर है, जहां यह सिर्फ शोध की बजाय नेतृत्व के मिशन में परिवर्तित हो रहा है। एक्सिओम-4 मिशन इसी यात्रा का एक अहम हिस्सा है, जो अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की उभरती क्षमताओं और वैश्विक स्थिति को दर्शाती है। ■

पीएम मोदी से शुभांशु बोले-

अंतरिक्ष से बहुत भव्य दिखता है भारत

अंतरिक्ष में भारत की वैज्ञानिक क्षमता और वैश्विक अंतरिक्ष अनुसंधान में उसकी मजबूत भागीदारी का नया प्रतीक बने एक्सिओम-4 मिशन के बारे में खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्रुप कैप्टन शुभांशु से सीधी बात की। 28 जून को हुई इस बातचीत में पीएम मोदी ने शुभांशु को शुभकामनाएं दीं तो साथ कहा कि आप आज मातृभूमि से, भारत भूमि से, सबसे दूर हैं लेकिन भारतवासियों के दिलों के सबसे करीब हैं। शुभांशु ने भी अंतरिक्ष से भारत को देखने का अपना अनुभव साझा किया। प्रस्तुत है बातचीत के संपादित अंश...

प्रधानमंत्री : आपके नाम में भी शुभ है और आपकी यात्रा नए युग का शुभारंभ भी है। इस समय बात हम दोनों कर रहे हैं, लेकिन मेरे साथ 140 करोड़ भारतवासियों की भावनाएं भी हैं। अंतरिक्ष में भारत का परचम लहराने के लिए मैं आपको हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। यह बताइए वहां सब कुशल मंगल है? आपकी तबीयत ठीक है?

शुभांशु शुक्ला : बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी और 140 करोड़ मेरे देशवासियों के शुभकामनाओं का। मैं यहां बिल्कुल ठीक हूं, सुरक्षित हूं। आप सबके आशीर्वाद और प्यार की वजह से बहुत अच्छा लग रहा है। नया एक्सपीरियंस है। मुझे लगता है कहीं न कहीं यह हमारे देश की भी यात्रा है। जब मैं छोटा था, मैंने कभी सोचा नहीं था कि एस्ट्रोनॉट बन सकता हूं। लेकिन मुझे लगता है कि आपके नेतृत्व में आज का भारत यह मौका देता है और उन सपनों को साकार करने का भी मौका देता है। तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। मैं बहुत गर्व महसूस कर रहा हूं कि मैं यहां पर अपने देश का प्रतिनिधित्व कर पा रहा हूं।

प्रधानमंत्री : अंतरिक्ष की विशालता देखकर सबसे पहले विचार क्या आया आपको?

शुभांशु शुक्ला : सच में बोलूं तो जब पहली बार हम लोग ऑर्बिट में पहुंचे तो पहला जो व्यू था, वह पृथ्वी का था। पृथ्वी को बाहर से देख कर मन में जो ख्याल आया, वह यह था कि पृथ्वी बिल्कुल एक दिखती है। मतलब बाहर से कोई सीमा रेखा नहीं दिखाई देती। दूसरा, जब पहली बार भारत को देखा, तो जब हम मैप पर देखते हैं बाकी देशों का आकार कितना बड़ा है, हमारा आकार कैसा है, लेकिन वह सही नहीं होता है क्योंकि हम 3D ऑब्जेक्ट को 2D यानी पेपर पर उतारते हैं। भारत सच में बहुत भव्य दिखता है, बहुत बड़ा दिखता है। पृथ्वी की एकता की जो फीलिंग है, हमारा भी मोटो है, अनेकता में एकता, जितना हम मैप पर देखते हैं, बाहर से देखने पर ऐसा लगता है कि कोई बॉर्डर, कोई राज्य, देश एग्जिस्ट ही नहीं करता। फाइनली हम सब ह्यूमैनिटी के पार्ट हैं और अर्थ हमारा एक घर है। हम सबके सब उसके नागरिक हैं।

प्रधानमंत्री : आप दूर अंतरिक्ष में हैं, जहां ग्रेविटी न के बराबर है, पर हर भारतीय देख रहा है कि आप कितने डाउन टू अर्थ हैं। आप जो गाजर का हलवा ले गए हैं, क्या उसे अपने साथियों को खिलाया?

शुभांशु शुक्ला : जी प्रधानमंत्री जी। यह कुछ चीजें मैं अपने देश की खाने की लेकर आया था, जैसे गाजर का हलवा, मूंग दाल का हलवा और आम रस और मैं चाहता था कि जो मेरे साथी यहां हैं, बाकी देशों से जो आए हैं, वह भी इसका स्वाद लें, जो भारत की समृद्ध पाककला है, उसका अनुभव लें। तो हम सभी ने बैठकर इसका स्वाद लिया और सबको बहुत पसंद आया।

प्रधानमंत्री : परिक्रमा करना भारत की सदियों पुरानी परंपरा है। आपको तो पृथ्वी माता की परिक्रमा का सौभाग्य मिला है। अभी आप पृथ्वी के किस भाग के ऊपर से गुजर रहे होंगे?

शुभांशु शुक्ला : इस समय तो मेरे पास यह सूचना उपलब्ध नहीं है, लेकिन थोड़ी देर पहले मैं खिड़की से बाहर देख रहा था तो हम लोग हवाई के ऊपर से गुजर रहे थे और हम दिन में 16 बार परिक्रमा करते हैं। 16 सूर्योदय और 16 सूर्यास्त देखते हैं। ऑर्बिट से और बहुत ही अचंभित कर देने वाला यह पूरा प्रोसेस है। हम इस समय करीब 28 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रहे हैं आपसे बात करते वक्त। यह गति पता नहीं चलती क्योंकि हम तो अंदर हैं, लेकिन कहीं न कहीं यह गति जरूर दिखाती है कि हमारा देश कितनी गति से आगे बढ़ रहा है। इस समय हम यहां पहुंचे हैं और अब यहां से और आगे जाना है।

प्रधानमंत्री : शुभांशु आपने जबरदस्त मेहनत की है। लंबी ट्रेनिंग करके गए हैं। अब आप रियल सिचुएशन में अंतरिक्ष में हैं, वहां की परिस्थितियां कितनी अलग हैं? कैसे अडॉप्ट कर रहे हैं?

शुभांशु शुक्ला : यहां पर तो सब कुछ ही अलग है। ट्रेनिंग की हमने पिछले पूरे 1 साल में, सारे सिस्टम, प्रोसेस और एक्सपेरिमेंट्स के बारे में मुझे पता था। लेकिन यहां आते ही अचानक सब चेंज हो गया क्योंकि हमारे शरीर को ग्रेविटी में रहने की इतनी आदत हो जाती है कि हर एक चीज उससे डिसाइड होती है, पर यहां आने के बाद चूंकि ग्रेविटी माइक्रोग्रैविटी है, तो छोटी-छोटी चीजें भी बहुत मुश्किल हो जाती हैं। अभी आपसे बात करते वक्त मैंने अपने पैरों को बांध रखा है, नहीं तो मैं ऊपर चला जाऊंगा। पानी पीना, पैदल चलना, सोना बहुत बड़ा चैलेंज है। ट्रेनिंग अच्छी है लेकिन वातावरण चेंज होता है तो थोड़ा सा यूज्ड टू होने में एक-दो दिन लगते हैं।

प्रधानमंत्री : भारत की ताकत साइंस और स्पिरिचुअलिटी दोनों हैं। आप अंतरिक्ष यात्रा पर हैं, लेकिन भारत की यात्रा भी चल रही होगी। भीतर में भारत दौड़ता होगा। क्या उस माहौल में मेडिटेशन और माइंडफूलनेस का लाभ भी मिलता है क्या?

शुभांशु शुक्ला : जी मैं बिल्कुल सहमत हूं। मैं कहीं ना कहीं यह मानता हूं कि भारत ऑलरेडी दौड़ रहा है और यह मिशन तो केवल एक पहली सीढ़ी है उस एक बड़ी दौड़ का और हम जरूर आगे पहुंच रहे हैं। अंतरिक्ष में हमारे खुद के स्टेशन भी होंगे और बहुत सारे लोग पहुंचेंगे। माइंडफूलनेस का भी बहुत फर्क पड़ता है। बहुत सारी सिचुएशंस ऐसी होती हैं नॉर्मल ट्रेनिंग के दौरान भी या फिर लॉन्च के दौरान भी, जो बहुत स्ट्रेसफुल होती है। माइंडफूलनेस से आप अपने आप को उन सिचुएशंस में शांत रख पाते हैं तो आप अच्छे डिसीजन ले पाते हैं।

प्रधानमंत्री : आप अंतरिक्ष में कई एक्सपेरिमेंट कर रहे हैं। क्या कोई ऐसा एक्सपेरिमेंट है, जो आने वाले समय में एग्रीकल्चर या हेल्थ सेक्टर को फायदा पहुंचाएगा?

शुभांशु शुक्ला : मैं बहुत गर्व से कह सकता हूं कि पहली बार भारतीय वैज्ञानिकों ने 7 यूनिक एक्सपेरिमेंट्स डिजाइन किए हैं, जो कि मैं अपने साथ स्टेशन पर लेकर आया हूं। पहला एक्सपेरिमेंट जो मैं करने वाला हूं, वह है स्टेम सेल के ऊपर। दूसरा एक्सपेरिमेंट है, वह सूक्ष्म शैवाल की ग्रोथ के ऊपर। यह सूक्ष्म शैवाल बहुत छोटे होते हैं, लेकिन बहुत पौष्टिक होते हैं।

प्रधानमंत्री : शुभांशु चंद्रयान की सफलता के बाद देश के बच्चों में, युवाओं में विज्ञान को लेकर एक नई रूचि पैदा हुई, अंतरिक्ष को एक्सप्लोर करने का जज्बा बढ़ा। आप भारत की युवा पीढ़ी को क्या मैसेज देंगे?

शुभांशु शुक्ला : पहले यह बताऊंगा कि भारत जिस दिशा में जा रहा है, हमने बहुत बोल्ड और बहुत ऊंचे सपने देखे हैं। उन सपनों को पूरा करने के लिए, हमें आप सबकी जरूरत है।

सक्सेस का कोई एक रास्ता नहीं होता, हर रास्ता कॉमन होता है। वो यह होती है कि आप कभी कोशिश मत छोड़िए। अगर आपने यह मूल मंत्र अपना लिया कि आप किसी भी रास्ते पर हों, कहीं पर भी हों, लेकिन आप कभी गिव अप नहीं करेंगे, तो सक्सेस चाहे आज आए या कल, आएगी जरूर।

प्रधानमंत्री : मुझे पक्का विश्वास है कि आपकी ये बातें देश के युवाओं को बहुत ही अच्छी लगेंगी। जब भी मेरी किसी से बात होती है, तो मैं होमवर्क जरूर देता हूं। हमें मिशन गगनयान को आगे बढ़ाना है, हमें अपना खुद का स्पेस स्टेशन बनाना है और चंद्रमा पर भारतीय एस्ट्रोनॉट की लैंडिंग भी करानी है। इन सारे मिशंस में आपके अनुभव बहुत काम आने वाले हैं।

शुभांशु शुक्ला : पूरे मिशन की ट्रेनिंग लेने के दौरान और एक्सपीरियंस करने के दौरान, जो मुझे सीख मिली है, वो सब एक स्पंज की तरह मैं आत्मसात कर रहा हूं। मुझे यकीन है कि यह सारी चीजें बहुत वैल्युएबल प्रूव होंगी। जब मैं वापस आऊंगा और इन्हें इफेक्टिवली अपने मिशन में अप्लाई कर सकेंगे। जल्दी से जल्दी अपने मिशन को पूरा कर सकेंगे।

प्रधानमंत्री : शुभांशु, मुझे पक्का विश्वास है कि आपका यह संदेश एक प्रेरणा देगा और मैं देख रहा हूं कि आपके परिवारजन भी सभी उतने ही भावुक हैं, उत्साह से भरे हुए हैं। मैं जानता हूं आपके जिम्मे बहुत काम है तो मैं आपका ज्यादा समय नहीं लूंगा। आज मैं विश्वास से कह सकता हूं कि यह भारत के गगनयान मिशन की सफलता का पहला अध्याय है। आपकी यह ऐतिहासिक यात्रा सिर्फ अंतरिक्ष तक सीमित नहीं है, ये हमारी विकसित भारत की यात्रा को तेज गति और नई मजबूती देगी। भारत दुनिया के लिए स्पेस की नई संभावनाओं के द्वार खोलने जा रहा है। अब भारत सिर्फ उड़ान नहीं भरेगा, भविष्य में नई उड़ानों के लिए मंच तैयार करेगा। मैं चाहता हूं, कुछ और भी सुनने की इच्छा है। आपके मन में जो भाव है, अगर वो आप प्रकट करेंगे, देशवासी, युवा पीढ़ी सुनेगी। मैं भी खुद बहुत आतुर हूं, कुछ और बातें आपसे सुनने के लिए।

शुभांशु शुक्ला : इस पूरी यात्रा में बहुत कुछ सीखा है। यहां पहुंचने के बाद पर्सनल उपलब्धि तो है ही, लेकिन कहीं न कहीं मुझे ये लगता है कि यह हमारे देश के लिए एक बहुत बड़ा कलेक्टिव

अचीवमेंट है। एक मैसेज देना चाहता हूं और वो यह है कि अगर आप कोशिश करते हैं और आप अपना भविष्य बनाते हैं, तो आपका भविष्य अच्छा बनेगा। हमारे देश का भविष्य अच्छा बनेगा और केवल एक बात अपने मन में रखिए कि आकाश की कभी सीमा नहीं होती। न आपके लिए, न मेरे लिए और न भारत के लिए।

प्रधानमंत्री : मैं आपको और आपके सभी साथियों को आपके मिशन की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। हम सबको आपकी वापसी का इंतजार है। अपना ध्यान रखिए, मां भारती का सम्मान बढ़ाते रहिए। 140 करोड़ देशवासियों की शुभकामनाएं। भारत माता की जय!

शुभांशु शुक्ला : धन्यवाद प्रधानमंत्री जी! सारे 140 करोड़ देशवासियों को धन्यवाद और स्पेस से सबके लिए भारत माता की जय!

हॉकी का 'तूफान'

पुणे के पास खड़की का इलाका... हॉकी का मैदान... जहां चमचमाती हॉकी स्टिक के साथ रोज बच्चों का जमघट लगता। इनके बीच गरीब परिवार का एक लड़का, जिसके पास नई स्टिक खरीदने के पैसे तक नहीं थे... कुछ टूटी लकड़ियों को बोरे की रस्सी से जोड़कर जब पहली बार वह खेलने उतरा तो किसी को अंदाजा नहीं था कि आगे चलकर यह भारतीय हॉकी टीम के महानतम कप्तानों के साथ सर्वश्रेष्ठ स्ट्राइकर के रूप में खुद को स्थापित करेगा। यह कहानी है धनराज पिल्लई की, जिन्हें मैदान पर उनकी रफ्तार के चलते भारतीय हॉकी का 'तूफान' कहा गया...

जन्म : 16 जुलाई 1968

भारतीय हॉकी टीम के खिलाड़ी रहे धनराज पिल्लई की गिनती एक ऐसे दमदार खिलाड़ी के रूप में होती है जो केवल खेल के लिए ही जीते हैं। नब्बे के दशक में भारतीय हॉकी टीम में हीरो धनराज अपनी रिस्ट वर्क और तेजी के लिए पहचाने जाने लगे। जब तक विरोधी टीम के खिलाड़ी उनकी रणनीति को भांपने की कोशिश करते वह गोल दाग देते।

धनराज पिल्लई का जन्म 16 जुलाई 1968 को हुआ था। बचपन मुश्किलों से भरा हुआ था। बेटा घर की गरीबी दूर करेगा यह सोच कर घर वालों ने नाम रखा, धनराज। पांच भाइयों में सबसे छोटे। परिवार की माली हालत बेहद खराब थी, इसलिए धनराज के हिस्से हमेशा अपने बड़े भाई रमेश की टूटी और पुरानी स्टिक ही आई। रमेश ने खुद को जाने-माने हॉकी खिलाड़ी के तौर पर स्थापित किया। उनके साथ ही धनराज भी मुंबई आ गए। भाई के साथ प्रैक्टिस करते-करते एक दिन वह भी उनकी टीम में शामिल हो गए। साल था 1987, दिल्ली का हॉकी मैदान एक ऐतिहासिक मैच देखने वाला था। धनराज अपनी टीम के साथ ग्राउंड में उतरे। लेकिन लोग टकटकी लगाए राजिंदर को देख रहे थे, जो उस दौर के बेहतरीन खिलाड़ी थे। अचानक मैच में सबका ध्यान एक लंबे पतले लड़के धनराज पिल्लई की ओर गया। धनराज की रफ्तार ऐसी थी कि उन्होंने राजिंदर के चंगुल से बॉल निकालकर शानदार गोल कर दिया। विरोधी खिलाड़ियों को समझ ही नहीं आ रहा था कि धनराज को कैसे रोकें। दर्शकों ने खुशी के मारे उनका नाम तूफान रख दिया। इसके बाद वर्ष 1989 में ग्वालियर में उन्होंने अपने खेल की ऐसी छाप छोड़ी कि सीधे भारतीय टीम में आ गए। 1998 में उनकी कप्तानी में भारतीय हॉकी टीम ने 32 साल बाद एशियन गेम्स का स्वर्ण पदक भी जीता। वर्ष 2003 में उन्होंने भारत को एशिया कप का खिताब भी दिलाया। धनराज अकेले ऐसे खिलाड़ी हैं, जिन्होंने 4 ओलंपिक, 4 वर्ल्ड कप, 4 एशियन गेम और 4 चैंपियंस ट्रॉफी में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 15 साल तक भारतीय हॉकी की सेवा करने के बाद 2004 में संन्यास लेने वाले धनराज सबसे ज्यादा गोल करने वाले भारत के शीर्ष पांच खिलाड़ी में शामिल हैं। अपने करियर में 339 अंतरराष्ट्रीय मैच में कुल 170 गोल करने वाले धनराज को साल 2000 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। धनराज का मानना है कि आज वह जो कुछ भी हैं वह हॉकी के कारण ही हैं।

28 अक्टूबर 2018 को मन की बात कार्यक्रम के 49वीं कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धनराज पिल्लई को याद किया था। उन्होंने कहा था कि विश्व में जब भी हॉकी की चर्चा होगी तो भारत के इन महान खिलाड़ियों के बिना हॉकी की कहानी अधूरी रहेगी। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद से तो पूरी दुनिया परिचित है। उसके बाद बलविंदर सिंह सीनियर, लेस्ली क्लॉडियस, मोहम्मद शाहिद, उधमसिंह से लेकर धनराज पिल्लई तक हॉकी ने एक बड़ा सफर तय किया है। ■

...ताकि कोई भी भारतीय इलाज की सुविधा से न हो वंचित

बिहार के ज्ञानेंद्र को आयुष्मान भारत से मिला नया जीवन

पीएम मोदी ने लिखा पत्र, कहा- 'आपका स्वास्थ्य, हमारा संकल्प'

"आयुष्मान भारत योजना से करोड़ों लोग लाभान्वित हुए हैं, उसमें से एक मैं भी हूं। मुझे किडनी की समस्या हो गई थी और इस योजना से बिहार के पटना में मेरा इलाज हुआ है। इस योजना से देश के गरीब व मध्यम वर्ग के लोगों को काफी लाभ मिल रहा है। यह योजना बहुत ही कारगर व लाभप्रद है।"

सहजता से स्वास्थ्य लाभ मिलने की संतुष्टि और बिना किसी खर्च के इलाज मिल जाने के सुकून भरे यह शब्द हैं बिहार के ज्ञानेंद्र कुमार गुप्ता के, जिनका आयुष्मान योजना की सुविधा से किडनी का निःशुल्क इलाज संभव हुआ है। ज्ञानेंद्र ने इलाज के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर हृदय से आभार जताया। इस परिवर्तनकारी योजना से ज्ञानेंद्र जैसे करोड़ों लोगों को लाभ मिलना सहज हुआ है, जो लगभग एक दशक पूर्व इलाज के खर्च के बोझ से गरीबी रेखा से नीचे चले जाते थे। ऐसे में पांच लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की क्रांतिकारी योजना देश के 55-60 करोड़ गरीब-मध्यम वर्ग-बुजुर्गों के लिए वरदान बन गई है। देश में पहले भी यूनिवर्सल हेल्थकेयर की बात होती थी लेकिन पहली बार किसी सरकार ने 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज के साथ दुनिया की सबसे बड़ी हेल्थकेयर सुविधा दी है। यही कारण है कि लाभान्वित लोगों के मन का भाव स्वाभाविक रूप से उमड़ता है। ज्ञानेंद्र ने अपना भाव शब्दों में पिरोकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेजा, तो प्रधानमंत्री मोदी की भी सहजता और नागरिकों से जुड़ाव की भावना उमड़ पड़ी।

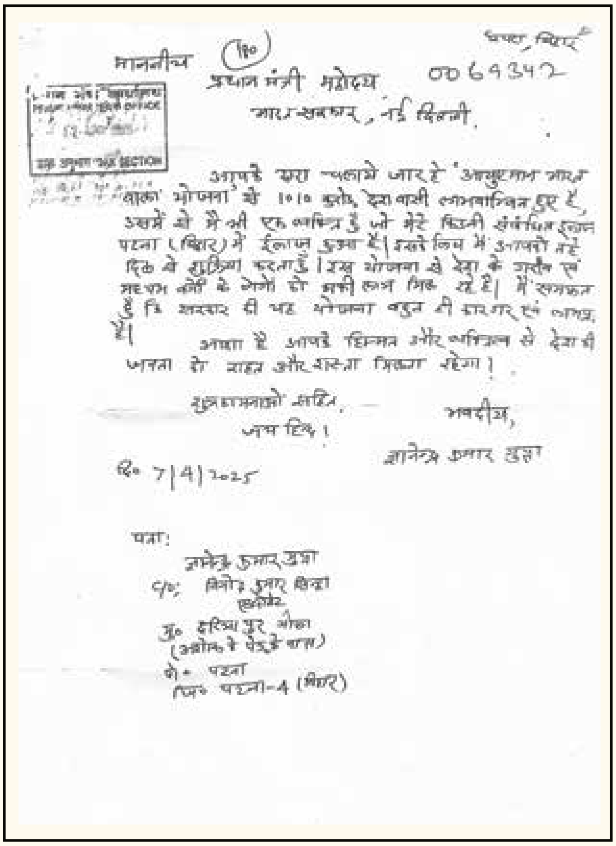

पटना, बिहार

माननीय
प्रधान मंत्री महोदय 0064342
भारत सरकार, नई दिल्ली।

आपके द्वारा चलाये जा रहे 'आयुष्मान भारत' योजना से 10 करोड़ देशवासी लाभान्वित हुए हैं, उसमें से मैं भी एक व्यक्ति हूँ जो मेरे किडनी संबंधित इलाज पटना (बिहार) में इलाज हुआ है। इसके लिए मैं आपको तहे दिल से शुक्रिया करता हूँ। इस योजना से देश के गरीब एवं मध्यम वर्गों के लोगों को काफी लाभ मिल रहा है। मैं समझता हूँ कि सरकार की यह योजना बहुत ही कारगर एवं लाभप्रद है।

आशा है आपके हिम्मत और व्यक्तित्व से देश की जनता को राहत और रास्ता मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,
जय हिंद!

भवदीय,
ज्ञानेन्द्र कुमार गुप्ता

दि० 7/4/2025

पता:
ज्ञानेन्द्र कुमार गुप्ता
C/o: विनोद कुमार सिन्हा
ग्रा० हरिया पुर
पो० पटना
जि० पटना-4 (बिहार)

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

नई दिल्ली
वैशाख 17, शक संवत् 1947
07 मई, 2025

श्री ज्ञानेंद्र कुमार गुप्ता जी,

नमस्कार। आपके स्वास्थ्य में सुधार के बारे में जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है। आपने पत्र में आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से बीते दिनों किडनी के सफल उपचार की जो जानकारी साझा की है, उससे हृदय को असीम संतुष्टि मिली है। ईश्वर से कामना है कि आप सदैव स्वस्थ रहें।

कहा गया है- **"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।"** अर्थात् शरीर ही सभी कार्यों और कर्तव्यों की पूर्ति का प्रथम साधन है। जब नागरिक स्वस्थ होंगे, तभी राष्ट्र भी सबल और सक्षम बनेगा।

हमने चिकित्सा पर होने वाले खर्च से परिवारों की जीवन भर की जमा-पूंजी एक झटके में खत्म होते देखा है। कई बार तो लोग इस खर्च के कारण इलाज करवाने से भी कतराते थे। आज आयुष्मान भारत योजना यह सुनिश्चित कर रही है कि कोई भी भारतीय इलाज से वंचित न रहे। समुचित उपचार मिलने पर किस तरह एक व्यक्ति के जीवन को नई उम्मीद और दिशा मिलती है, यह इस योजना ने सिद्ध कर दिखाया है।

देश भर से मेरे परिवारजन जब आयुष्मान भारत योजना का लाभ उठाकर अपने स्वास्थ्य लाभ का अनुभव साझा करते हैं तो, 'स्वस्थ भारत' के उस संकल्प की पुष्टि होती है, जो हमने 140 करोड़ देशवासियों के लिए लिया है।

हमने वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का जो लक्ष्य रखा है, उसे हमारे देश के स्वस्थ नागरिक मजबूती प्रदान करते हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति न केवल अपने परिवार को संबल देता है, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भी सक्रिय भूमिका निभाता है।

इलाज के बाद आप जैसे सभी साथियों को अपने जीवन में फिर से उसी आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते देखना हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि है। आप सभी की शुभकामनाएं हमारी ऊर्जा हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप निरंतर स्वस्थ, सक्रिय और प्रसन्न रहें।

आपका,

(नरेन्द्र मोदी)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के पटना निवासी ज्ञानेंद्र कुमार गुप्ता को पत्र लिखकर उनके स्वास्थ्य में सुधार के लिए शुभकामनाएं दी हैं। प्रधानमंत्री मोदी की देश के नागरिकों के प्रति कल्याण की सोच कितनी संवेदनशील है, यह उनके पत्र में भी स्पष्ट है। उन्होंने अपने पत्र में लिखा, *"आपके स्वास्थ्य में सुधार के बारे में जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है आपने पत्र में आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से बीते दिनों किडनी के सफल उपचार की जो जानकारी साझा की है, उससे हृदय को असीम संतुष्टि मिली है।"* ज्ञानेंद्र ने अपने पत्र में लिखा है, *"आपके (पीएम मोदी) हिम्मत और व्यक्तित्व से देश की जनता को राहत और रास्ता मिलता रहेगा।"* इसके जवाब में प्रधानमंत्री मोदी भी अपनी भावना को शब्दों में पिरोने से नहीं रोक पाए। उन्होंने लिखा, *"हमने चिकित्सा पर होने वाले खर्च से परिवारों की जीवन भर की जमा-पूंजी एक झटके में खत्म होते देखा है। कई बार तो लोग इस खर्च के कारण इलाज करवाने से भी कतराते थे। आज आयुष्मान भारत योजना यह सुनिश्चित कर रही है कि कोई भी भारतीय इलाज से वंचित न रहे। समुचित उपचार मिलने पर किस तरह एक व्यक्ति के जीवन को नई उम्मीद और दिशा मिलती है, यह इस योजना ने सिद्ध कर दिखाया है।"*

पीएम मोदी ने आगे यह भी लिखा कि एक विकसित भारत के लिए स्वस्थ भारत कितना जरूरी है। एक स्वस्थ व्यक्ति न केवल अपने परिवार को संबल देता है, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भी सक्रिय भूमिका निभाता है। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पत्र में ज्ञानेंद्र को लिखा, *"कहा गया है- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।' अर्थात् शरीर ही सभी कार्यों और कर्तव्यों की पूर्ति का प्रथम साधन है। जब नागरिक स्वस्थ होंगे, तभी राष्ट्र भी सबल और सक्षम बनेगा।"*

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि केंद्र सरकार की योजनाएं जमीनी स्तर पर आम नागरिकों तक पहुंच रही हैं और उनके जीवन में वास्तविक परिवर्तन ला रही हैं, यह अत्यंत सुखद है। उन्होंने कहा, *"इलाज के बाद आप जैसे सभी साथियों को अपने जीवन में फिर से उसी आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते देखना हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि है।"* पत्र के अंत में प्रधानमंत्री ने ज्ञानेंद्र के अच्छे स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

निःसंदेह, आयुष्मान भारत योजना, विकसित भारत के लक्ष्य की दिशा में एक स्वास्थ्य क्रांति है। दरअसल, अध्ययन बताते हैं कि बेहतर स्वास्थ्य सेवा से जीवन प्रत्याशा में एक साल की भी बढ़ोतरी मात्र से जीडीपी में 4 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है। ऐसे में आयुष्मान भारत योजना, विविधता से भरे बड़ी आबादी वाले देश के लिए कितना महत्वपूर्ण है, उसे सहजता से समझा जा सकता है। ■

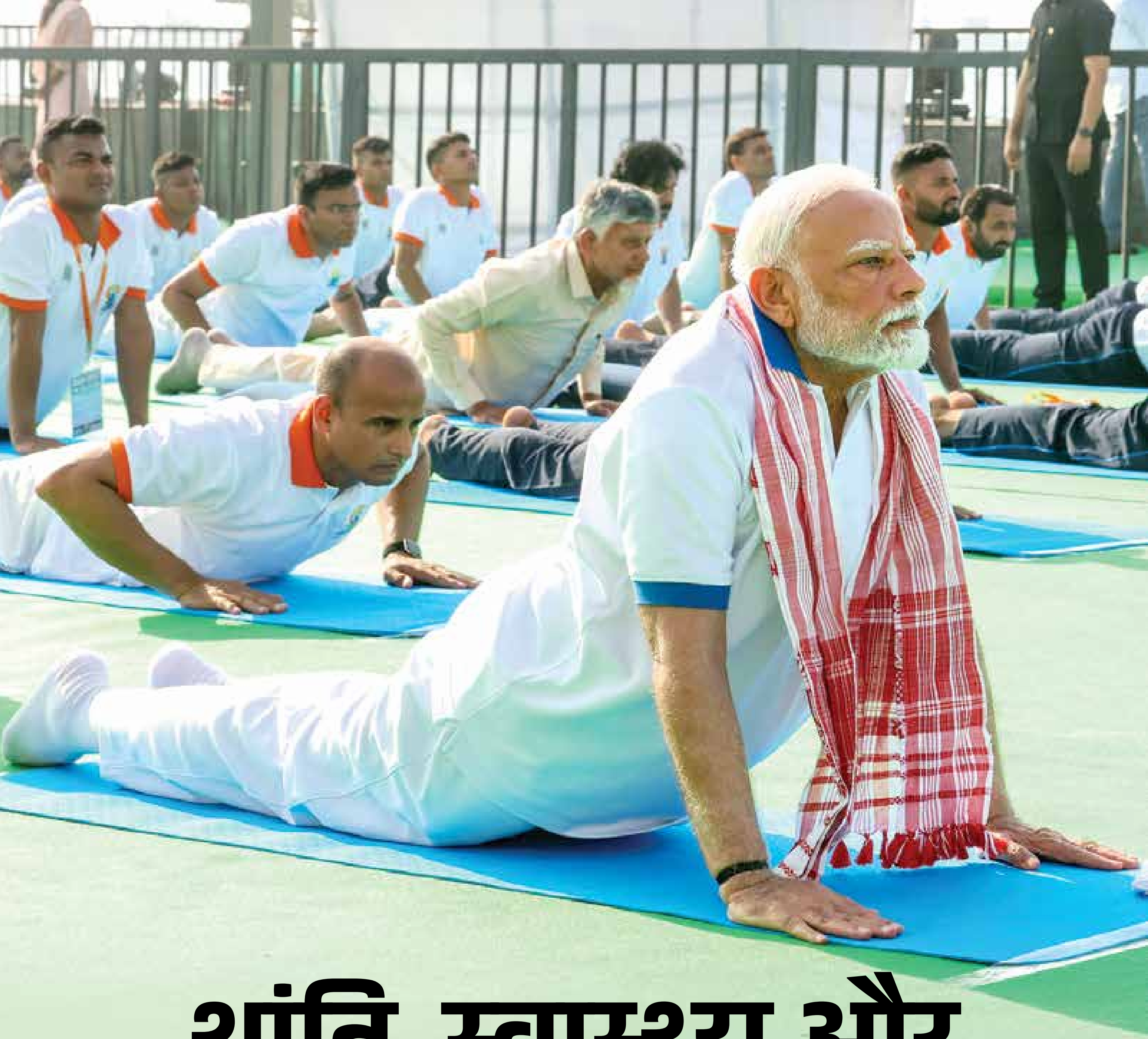

शांति, स्वास्थ्य और समरसता का 'योग'

भारत की प्राचीन सभ्यता सदैव ज्ञान, स्वास्थ्य और सद्भाव की पक्षधर रही है। शून्य की खोज से लेकर खगोल विज्ञान तक, शल्य चिकित्सा से लेकर दर्शन में योगदान तक, भारत सदियों से दुनिया को समृद्ध करता आया है। वसुधैव कुटुम्बकम् के इसी आदर्श में निहित एक पड़ाव योग के रूप में भी आया, वर्ष 2014 में जब भारत के प्रस्ताव पर दुनिया के 177 देश की सहमति से एक साथ हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का ऐलान किया गया। अब एक बार फिर 21 जून को 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के जरिए दुनिया ने भारत की सांस्कृतिक ताकत देखी तो विशाखापत्तनम में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 3 लाख से ज्यादा लोगों के साथ योग कर बनाया सबसे बड़े समारोह का विश्व रिकॉर्ड...

भारत की सॉफ्ट पावर के प्रतीक के रूप में योग सीमाओं और संस्कृतियों से परे जा कर शांति, कल्याण और एकता को बढ़ावा दे रहा है। वैश्विक सद्भाव के रूप में भारत के इसी शाश्वत उपहार के साथ दुनियाभर के 191 देश में लगभग 1,300 स्थान पर 2,000 से ज्यादा वैश्विक कार्यक्रमों के साथ इस बार 'एक धरती-एक सेहत के लिए योग' थीम पर योगाभ्यास किया। विशाखापत्तनम में समुद्र तट पर आयोजित मुख्य कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योग दुनिया की इसी एकजुटता का जिक्र किया। पीएम मोदी ने कहा कि वो दिन जब संयुक्त राष्ट्र में भारत ने प्रस्ताव रखा कि 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता मिले और तब कम से कम समय में दुनिया के 177 देश इस प्रस्ताव के साथ खड़े हुए। आज की दुनिया में ऐसी एकजुटता, ऐसा समर्थन सामान्य घटना नहीं है। यह सिर्फ एक प्रस्ताव का समर्थन भर नहीं था, यह मानवता के भले के लिए दुनिया का सामूहिक प्रयास था। आज 11 साल बाद, योग दुनियाभर में करोड़ों लोगों की जीवन शैली का हिस्सा बन चुका है।

विशाखापत्तनम में बने दो विश्व रिकॉर्ड

तो दुनिया के सबसे ऊंचे पुल पर भी योग

लद्दाख से लेकर केरल तो अरुणाचल से लेकर गुजरात तक देश भर में 11वें अंतराष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

- पर्यटन मंत्रालय ने मनोहर स्मारक और शांत प्राकृतिक परिदृश्यों वाले 40 पर्यटन स्थल पर तो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने गुजरात के अडालज की वाव से लेकर कोणार्क के सूर्य मंदिर सहित 81 विरासत स्थल पर सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किए। दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर में भारतीय सेना के जवानों ने योगाभ्यास किया।

15,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित गलवान घाटी में योग सत्र आयोजित किए गए।

- भारतीय रेलवे ने पहली बार जम्मू और कश्मीर स्थित दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे पुल - चिनाब, केबल पर टिके पहले रेल पुल- अंजी खड्ड और देश के पहले वर्टिकल-लिफ्ट रेल पुल- तमिलनाडु में पम्बन पुल पर योग सत्र आयोजित किए।

उधर, विशाखापत्तनम में दो महत्वपूर्ण गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाए गए, जो योग की गहरी पैठ और व्यापक स्वीकार्यता को दर्शाते हैं।

पहला रिकॉर्ड
- एक ही स्थान पर योगाभ्यास के लिए सबसे बड़े जनसमूह का एकत्रित होना है।
- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर वहां तीन लाख 2 हजार लोगों ने योगाभ्यास किया।

दूसरा रिकॉर्ड
- सबसे बड़े सामूहिक सूर्य नमस्कार का है, जब 20 जून, 2025 को 22,122 आदिवासी छात्र सूर्य नमस्कार आयोजन में शामिल हुए।

देहरादून के सामूहिक योग में शामिल हुईं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर देहरादून के उत्तराखंड राज्य पुलिस लाइन मैदान में सामूहिक योग प्रदर्शन में शामिल हुईं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इस मौके पर कहा कि 'योग' का अर्थ है 'जोड़ना'। योग का अभ्यास व्यक्ति के शरीर, मन एवं आत्मा को जोड़ता है और उसे स्वस्थ बनाता है। योग एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक समुदाय को दूसरे समुदाय से और एक देश को दूसरे देश से भी जोड़ सकता है।

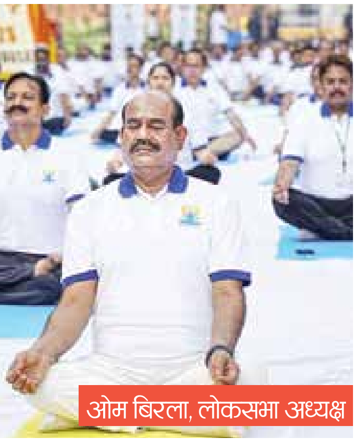

ओम बिरला, लोकसभा अध्यक्ष

राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

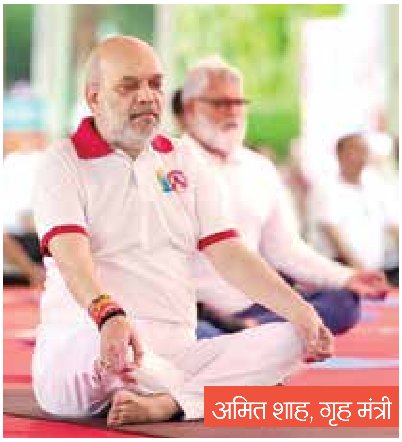

अमित शाह, गृह मंत्री

नितिन गडकरी, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री

सीमा सड़क संगठन, सेला सुरंग

चिनाब रेल ब्रिज

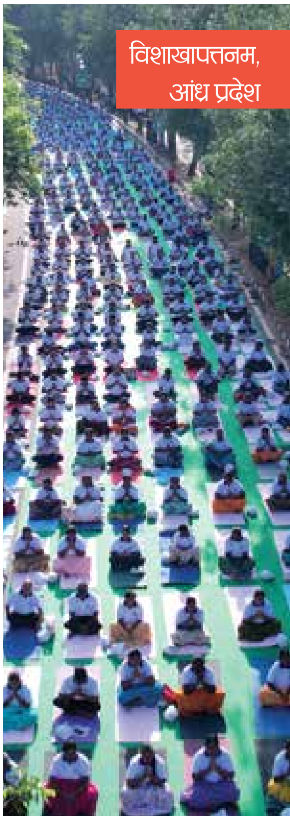

विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश

विशाखापत्तनम

भारतीय वायुसेना, दिल्ली

वाशिंगटन डीसी, यूएसए

ताबानान, बाली

रियो डी जनेरियो

संयुक्त राष्ट्र जिनेवा

टाइम्स स्क्वायर

कोलंबिया

दक्षिण अफ्रीका

अटारी-वाघा सीमा

कच्छ, गुजरात
सियाचिन
जम्मू और कश्मीर
गुवाहाटी, असम
नई दिल्ली
कर्तव्य पथ, नई दिल्ली
लद्दाख, भारतीय सेना
मुंबई
हुम्हामा परिसर, श्रीनगर

भारत तिब्बत सीमा पुलिस

गुवाहाटी, असम

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भारतीय सेना, हिमालय

अहमदाबाद, गुजरात

जलगांव, महाराष्ट्र

पीएम मोदी ने कहा कि गर्व होता है, जब दिव्यांग साथी ब्रेल में योग शास्त्र पढ़ते हैं, वैज्ञानिक अंतरिक्ष में योग करते हैं, गांव-गांव में युवा साथी योग ओलंपियाड में भाग लेते हैं। चाहे सिडनी ओपेरा हाउस की सीढ़ियां हों, एवरेस्ट की चोटी हो या फिर समंदर का विस्तार, हर जगह से एक ही संदेश आता है-योग सभी का है और सभी के लिए है।

दुनिया में योग के बढ़ते दायरे और भारत की ओर से इसके लिए किए जा रहे लगातार प्रयासों का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि विश्व में योग के प्रसार के लिए भारत योग विज्ञान को आधुनिक शोध के जरिए और अधिक सशक्त कर रहा है। योग की वैज्ञानिकता को आधुनिक चिकित्सा पद्धति में स्थान मिले, यह प्रयास है। राष्ट्रीय आयुष मिशन के जरिए भी योग और वेलनेस के मंत्र को आगे बढ़ाया जा रहा है। डिजिटल टेक्नोलॉजी ने भी इसमें बड़ी भूमिका निभाई है। देश के कोने-कोने में योग का आयोजन हो रहा है, यह योग के बढ़ते दायरे को दर्शाता है। ■

ऑपरेशन सिंधु

संकट में संकल्प का प्रतीक...

दुनिया में कहीं भी रहने वाला भारतीय, 'राष्ट्रदूत' जैसा होता है। नए भारत की इस सोच ने हर आपदा, हर संकट में अपने लोगों को न केवल बचाया है, बल्कि हर संकट की घड़ी में सहायता और राहत प्रयासों का नेतृत्व भी किया है। बीते कुछ वर्षों में भारत की नीति में आई आक्रामकता के साथ आत्मनिर्भरता ने पूर्व की 'डिफेंसिव और डिपेंडेंट' की मानसिकता को किनारे कर हर आपदा में दुनिया को देश का दम दिखाया है। यही कारण है कि कोविड का लॉकडाउन हो या रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच भारतीयों को सुरक्षित स्वदेश लाने के लिए चलाया गया जीवनदायी मिशन 'ऑपरेशन गंगा' और अब ईरान-इजरायल युद्ध के बीच 'ऑपरेशन सिंधु' ने तिरंगे की ताकत का अहसास कराया है। साथ ही, अफगानिस्तान, नेपाल, सूडान, यमन, इंडोनेशिया जैसे देशों में जब भी कोई संकट आया या भारतीयों को मदद की जरूरत पड़ी, विशेष ऑपरेशन के जरिए भारत सरकार ने लोगों को बचाया और विश्व में बढ़ती राष्ट्र की शक्ति का भी अहसास कराया। भारत की इस वैश्विक उपलब्धि पर आज गौरवान्वित महसूस कर रहा है देश का जन-जन...

घर लौटकर बहुत अच्छा लग रहा है। हमें उम्मीद नहीं थी कि हम लौट पाएंगे। लेकिन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय और भारतीय दूतावास ने बेहतरीन व्यवस्था की और हम स्वदेश लौट पाए हैं। यह कहना है ईरान में पढ़ने वाली मेडिकल की छात्रा सबा रसूल का, जो 19 जून को अपने घर श्रीनगर सकुशल लौट आई हैं।

हमारे छात्रावास के ऊपर से मिसाइल जा रही थी, शीशे हिल रहे थे। भारत सरकार और दूतावास ने हमें स्वदेश वापस लाने की पूरी तैयारी की थी और हम बिना किसी परेशानी के भारत लौट आए हैं। भारत सरकार का आभार प्रकट करते हुए यह कहना है ईरान से लौटीं एक छात्रा मरियम रोज का।

प्रयागराज की रहने वाली अलमास रिजवी कहती हैं, "भारतीय दूतावास ने हमारे लिए सारी व्यवस्था कर रखी थी। होटल से लेकर लंच और डिनर तक, हमें किसी बात की चिंता तक नहीं करने दी गई। हमें यह अहसास भी नहीं होने दिया कि हम युद्ध जैसी स्थिति में रहे हैं। अपने देश लौटकर सुकून मिला।"

युद्धग्रस्त ईरान से अपने घर लौटीं एलिया बतूल कहती हैं, "जब से हमलों की खबर मिली, मेरा परिवार बहुत परेशान हो गया। भारत सरकार का बहुत-बहुत धन्यवाद, जो इस संकट की घड़ी में हम सकुशल अपने घर लौट पाए।"

ईरान से लौटीं तजकिया फातिमा जब अपने परिवार से मिलीं तो वो फूले नहीं समा रही थीं। उन्होंने कहा कि वहां अभी जंग के हालात थे। हमें लग रहा था कि कैसे निकलेंगे, लेकिन भारत सरकार के हम शुक्रगुजार हैं। उन्होंने हमें बहुत अच्छे तरीके से निकाल लिया।

सैयद मंसूर कहते हैं कि युद्धग्रस्त क्षेत्र से निकलकर अपने वतन वापस पहुंचे तो सबसे पहले हमने अपनी जमीन को झुककर प्रणाम किया। हम कठिन परिस्थिति से निकलकर वापस स्वदेश पहुंच पाए, यह भारत का सामर्थ्य दिखाता है।

भारत लौटे मोहम्मद अली काजिम ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि वह मशहद शहर से लौटे हैं और घर वापस आकर बहुत अच्छा महसूस कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि हम धार्मिक यात्रा पर गए थे, लेकिन वहां खासकर तेहरान में हालात बहुत खराब हैं। ऐसे में भारत सरकार ने हमारी बहुत मदद की, हमें बॉर्डर पार करवाया और भारत लाने की पूरी व्यवस्था की।

ईरान से अपनी घर वापसी की आस में बैठे महबूब अली मुशर्रफ की दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचते ही आखें नम हो गईं। वतन वापसी और अपनों के बीच आ कर बेहद खुश हैं। उन्होंने भारत आते ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत सरकार का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि वहां बहुत मुश्किल हालात थे। वहां एक-एक पल बहुत भारी लग रहा था... हिंदुस्तान जिंदाबाद।

भारतीय छात्रों और नागरिकों के चेहरे पर युद्धग्रस्त क्षेत्र के संकट से स्वदेश वापसी का सुकून भरा यह भाव उस संकल्प का प्रतीक बन गया है, जहां प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा वर्तमान केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। रूस-यूक्रेन संकट के बीच 'ऑपरेशन गंगा' के तहत स्वदेश लौटे छात्रों ने भी कुछ इसी तरह भारतीय तिरंगे की ताकत को महसूस किया था और स्वदेश वापसी का सुकून उनके चेहरे पर था। अब ईरान-इजरायल संघर्ष के बीच 'ऑपरेशन सिंधु' के अंतर्गत भारत सरकार ने ईरान में फंसे भारतीय छात्रों और नागरिकों को सकुशल स्वदेश वापस लाने का मिशन शुरू कर दिया। इस मिशन के तहत 19 जून को पहला विमान 110 भारतीय नागरिकों को युद्ध क्षेत्र से सुरक्षित वापस लेकर पहुंचा। इसमें 90 छात्र जम्मू-कश्मीर से थे।

निःसंदेह यह भारतीयों के लिए गौरव की बात है और सीना गर्व से चौड़ा होने का अहसास। दुनिया में कहीं भी संकट आया और भारत ने जिस तरह से राहत-बचाव का ऑपरेशन चलाया, उसके बाद स्वदेश लौटने वाले भारतीयों की ऐसी अनगिनत कहानियां बताती हैं कि कैसे हर संकट में नए भारत का नेतृत्व अपने लोगों के साथ खड़ा है और उसे सुरक्षित स्वदेश वापस लाने का साहस रखता है। यही वजह है कि वर्तमान में ईरान-इजरायल का संकट हो या कुछ वर्ष पूर्व रूस-यूक्रेन का संघर्ष, भारत ने अपने नागरिकों को लगातार यही संदेश दिया- ये जो देश है तेरा, स्वदेश है तेरा निराश न हों, आस न खोना, भारत सदैव आपके साथ खड़ा है। भारत सरकार की कुशल नीति और प्रबंधन की यह बातें नए भारत के सामर्थ्य को दर्शाती हैं, जिसमें सरकार ने न सिर्फ कहा बल्कि हर भारतीय की सुरक्षित स्वदेश वापसी की अपनी प्रतिबद्धता को साकार करके ही दम लिया।

दरअसल, प्रत्येक भारतीय नागरिक राष्ट्र और उसके नेतृत्व के लिए कितना महत्वपूर्ण है, इसको 2017 के एक ट्वीट से समझा जा सकता है। तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने 8 जून 2017 को किसी भारतीय की ओर से मदद को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा था, "अगर आप मंगल ग्रह पर फंसे हैं तो वहां भी भारतीय दूतावास आपकी मदद करेगा।" ईरान-इजरायल संघर्ष में 'ऑपरेशन सिंधु' हो या पूर्व में यूक्रेन संकट के बीच चलाया गया 'ऑपरेशन गंगा', इसने सिद्ध किया है कि नए भारत का नेतृत्व अतिशयोक्ति में नहीं बल्कि हर समस्या के समाधान के लिए न केवल संकल्पित है, बल्कि उसे चरितार्थ करने का सामर्थ्य भी रखता है। वर्ष 2021 में अफगानिस्तान में फंसे भारतीयों को निकालने के लिए चलाया गया 'ऑपरेशन देवी शक्ति' हो या फिर 2020 में कोविड जैसी महामारी के बीच अपनों को स्वदेश लाने के लिए चलाया गया 'वंदे भारत मिशन', 'लाइफलाइन उड़ान मिशन', 'ऑपरेशन समुद्र सेतु' या फिर 2016 में दक्षिनी सूडान में 'ऑपरेशन संकट मोचन', 2015 में यमन संकट के दौरान 'ऑपरेशन राहत' 2015 में नेपाल भूकंप के दौरान भारतीयों को वापस लाने के लिए 'ऑपरेशन मैत्री' या फिर इंडोनेशिया में भूकंप-सुनामी के दौरान चलाया गया 'ऑपरेशन समुद्र मैत्री'। भारत ने सदैव "हर भारतीय है महत्वपूर्ण" के मंत्र को अपनाकर अपने लोगों की स्वदेश वापसी कराई। इतना ही नहीं, दुनिया के अन्य देशों- मोजांबिक में तूफान के दौरान 'ऑपरेशन सहायता-19', कोविड के समय श्रीलंका, बांग्लादेश, चीन, अमेरिका, म्यान्मार, मेडागास्कर, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के

"हमने अपनी परंपराओं का पालन करते हुए अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं का बोझ अपने कंधों पर उठाया है। आपदा के समय में हमने सहायता और राहत प्रयासों का नेतृत्व किया है। नेपाल में भूकंप, यमन से निकासी और मालदीव एवं फिजी में संकट के दौरान हमने सबसे पहले पहल की। अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बरकरार रखने के लिए हम अपनी जिम्मेदारी निभाने में भी कभी नहीं झिझके।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

ईरान से
3,597
भारतीय लाए गए
30 जून तक

ऑपरेशन सिंधु के जरिए
युद्ध के मैदान से वतन वापसी

इजराइल से
818
भारतीय लाए गए
30 जून तक

3 भारतीय वायुसेना के विमान सहित 19 विशेष उड़ान का उपयोग। 14 ओसीआई कार्ड धारक, 9 नेपाली नागरिक, 4 श्रीलंकाई नागरिक और 1 भारतीय नागरिक के ईरानी जीवनसाथी को भी ईरान से निकाला गया।

- ईरान में 10 हजार से अधिक भारतीय रहते हैं। इनमें से लगभग 6,000 छात्र हैं। इजराइल के साथ संघर्ष को देखते हुए भारत ने 18 जून को ऑपरेशन सिंधु की पटकथा लिखी। मकसद था, हर भारतीय को सुरक्षित वतन वापस लाना। इजराइल में रह रहे भारतीयों के लिए भी दूतावास में 19 जून को एडवाइजरी जारी कर निकलने के इच्छुक लोगों को इसके लिए जरूरी मदद का एलान किया। जिन भारतीय नागरिकों ने दूतावास में अपना पंजीकरण नहीं कराया है, उनके लिए एक लिंक भी जारी किया गया।
- तेहरान स्थित भारतीय दूतावास ने आर्मेनिया स्थित मिशन के साथ मिलकर, ईरान के उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों से नागरिकों को सक्रिय रूप से सुरक्षित क्षेत्रों में स्थानांतरित करना शुरू किया।
- विदेश मंत्रालय की तरफ से नई दिल्ली में चौबीस घंटे चलने वाला नियंत्रण कक्ष भी भारतीय नागरिकों के संपर्क में रहने के लिए स्थापित किया।
- ईरान का बॉर्डर 7 देश से लगता है। ये देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, अजरबैजान, आर्मेनिया, तुर्किये और इराक हैं। इसके अलावा समुद्री सीमा ओमान के साथ है।
- भारत ने अपने लोगों को निकालने के लिए आर्मेनिया का रास्ता चुना। इसके तहत ईरान से आर्मेनिया बॉर्डर तक लोगों को सड़क और फिर राजधानी येरवेन से हवाई मार्ग से दिल्ली लाने का रास्ता चुना गया।

110
भारतीय छात्रों को लेकर पहला विमान 19 जून की सुबह दिल्ली पहुंचा।

- ईरान ने भी एक विशेष कदम उठाते हुए भारत के निकासी ऑपरेशन को सहज बनाने के लिए अपना एयरस्पेस खोल दिया।

नागरिकों को भी बचाने और संकट के समय सहायता पहुंचाकर मानवता धर्म की मिसाल पेश की।

जीवनदायिनी मिशन 'ऑपरेशन सिंधु'

युद्धग्रस्त क्षेत्र में जब कोई फंस जाता है तब उसकी मनःस्थिति कैसी होती है, इसका असली अहसास वहां फंसे लोगों को ही होता है। जीवन और मौत के बीच की दूरी कब खत्म हो जाए इसका डर वही बता सकता है। ईरान-इजरायल संघर्ष के बीच जब छात्रों के छात्रावास के ऊपर से मिसाइलें गुजर रही हों, तब मन-मस्तिष्क में किस तरह का डर उत्पन्न होता है, उसे केवल महसूस किया जा सकता है। भारतीय नागरिक और छात्रों के मन में क्या चल रहा होगा, उसे स्वदेश वापस लौटने वाले छात्र-छात्राओं के उदाहरणों और मीडिया के विभिन्न माध्यमों से आए उनके विचारों से बखूबी समझा जा सकता है। ईरान-इजरायल में बढ़ते तनाव के बीच भारत सरकार ने 19 जून को

ऑपरेशन गंगा

प्रधानमंत्री मोदी, चार केंद्रीय मंत्री और 'सुपर 30' ने लिखी 'ऑपरेशन गंगा' की सफलता की कहानी

रूस के साथ युद्ध के बीच यूक्रेन में फंसे हुए भारतीयों को वापस लाने के लिए चलाए गए ऑपरेशन गंगा की सफलता की कहानी में नेतृत्वकर्ता खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं।

15 फरवरी 2022
कीव में भारतीय दूतावास ने एडवाइजरी जारी कर भारतीयों को यूक्रेन छोड़ने को कहा। इसके बाद 3 और एडवाइजरी जारी कर ऐसे भारतीय जिनका यूक्रेन में रुकना बहुत जरूरी नहीं हो, उन्हें तत्काल अस्थाई तौर पर दूतावास को बताकर यूक्रेन छोड़ने को कहा गया।

16 फरवरी 2022
केंद्र सरकार ने एविएशन से जुड़ी अथॉरिटी और एयरलाइंस को भारत-यूक्रेन के बीच उड़ानों की संख्या बढ़ाने को कहा और उड्डयन मंत्रालय ने इन उड़ानों पर लगे सभी प्रतिबंधों को हटा दिया। आरटीपीसीआर टेस्ट की अनिवार्यता खत्म कर दी गई।

1 मार्च 2022
केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, वीके सिंह, हरदीप सिंह पुरी और किरेन रिजिजू खुद 'ऑपरेशन गंगा' की निगरानी के लिए पोलैंड, रोमानिया, स्लोवाकिया, हंगरी और मोल्डोवा पहुंचे।

4, 6 मार्च 2022
उच्च स्तरीय बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद हालातों की समीक्षा की। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से तीन और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से दो बार खुद बात कर प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीयों को यूक्रेन से बाहर निकालने में सहयोग की मांग की।

- प्रधानमंत्री से बातचीत के बाद दोनों देश मानवीय गलियारा बनाने को राजी हुए तो रूस ने खारकीव और सूमी में भारतीय छात्रों के निकलने के लिए युद्ध विराम तक की घोषणा की। यूक्रेन के पड़ोसी देशों के राष्ट्र प्रमुखों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 बार फोन पर बात की।
- प्रधानमंत्री मोदी से बातचीत के बाद मॉस्को- कीव के अधिकारियों ने मानवीय गलियारा बनाने के निर्देश दिए।

बयान जारी कर कहा कि तनाव ग्रस्त क्षेत्र से लौटने की इच्छा रखने वाले भारतीय नागरिकों को वापस लाने का अभियान चलाया जाएगा। इसके लिए वेबसाइट, कंट्रोल रूम नंबर, ई-मेल आदि जारी किए गए। भारतीय दूतावास पहले ही एडवाइजरी जारी कर चुका था। भारत सरकार ने अपने बयान में कहा कि स्थिति की लगातार निगरानी की जा रही है, ताकि भारतीय नागरिकों को हरसंभव सहायता मिल सके।

रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच मिसाल बना था भारत का 'ऑपरेशन गंगा'

सबको सकुशल वापस लाने के विजन के साथ 'ऑपरेशन गंगा' मिशन की शुरुआत हुई थी। प्रधानमंत्री ने स्वयं उच्च स्तरीय बैठक में भारतीय छात्रों की सुरक्षा और निकासी पर जोर दिया था। उन्होंने कहा था, "यूक्रेन में फंसे छात्रों की सुरक्षा और निकासी प्राथमिकता है। छात्रों की निकासी में तेजी लाने के लिए यूक्रेन के पड़ोसी देशों के साथ और ज्यादा सहयोग बढ़ाया जाएगा।" उन्होंने पहले दिन ही स्पष्ट कर दिया था कि मुश्किल समय में भारतीय को स्वदेश लाना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसलिए युद्ध के पहले दिन ही प्रधानमंत्री मोदी ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से फोन पर बातचीत कर भारतीयों की सकुशल वापसी की राह बनाई थी।

इस मिशन की सबसे बड़ी मुश्किल यह थी कि यूक्रेन का हवाई क्षेत्र बंद हो चुका था। ऐसे में भारत ने अपने नागरिकों को वापस लाने के लिए यूक्रेन के पड़ोसी देशों- रोमानिया, हंगरी, पोलैंड और स्लोवाक गणतंत्र को अपना केंद्र बनाया। किसी भी भारतीय को मुश्किल नहीं हो और सबको स्वदेश वापस लाने की मुहिम में कोई बाधा उत्पन्न नहीं हो, इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी ने बेहद मानवीय सोच को साकार किया और अपने चार तत्कालीन केंद्रीय मंत्रियों- हरदीप सिंह पुरी, ज्योतिरादित्य सिंधिया, किरेन रिजिजू और जनरल वी.के. सिंह को इन देशों में भेजकर भारतीयों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की।

12 बस में युद्धग्रस्त सूमी से भारतीय छात्रों को बैठाकर मध्य यूक्रेन के पोल्टावा ले जाया गया।

भारत के साथ ही बांग्लादेश, नेपाल और ट्यूनीशिया के नागरिकों को भी वहां से निकाला।

9 बांग्लादेश के छात्र | 3 नेपाल के छात्र

इन छात्रों को भारत ने यूक्रेन से रेस्क्यू किया।

- भारत ने चेर्निहाइव, सूमी, खार्किव और मारियुपोल में फंसे अपने नागरिकों को भी निकाला।
- पोलैंड के राष्ट्रपति के साथ यूरोपियन यूनियन के प्रेसीडेंट से प्रधानमंत्री मोदी ने खुद बात की। युद्धग्रस्त क्षेत्रों से आने वाले भारतीयों के लिए पड़ोसी देशों ने वीजा की अनिवार्यता खत्म की।
- विदेश मंत्री एस जयशंकर रूस और यूक्रेन के राजदूतों के साथ पोलैंड, हंगरी, रोमानिया, मोल्डोवा और स्लोवाकिया के प्रशासन के साथ लगातार संपर्क में रहे।
- हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में भारतीय विदेश सेवा (आइएफएस) के 30 युवा अधिकारी की कोर टीम बनाकर एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया। 150 से ज्यादा अधिकारी और टेक्निकल असिस्टेंट हर एक संभव मदद पहुंचाने के लिए पूरी तरह से जुटे रहे।

एयरलाइंस के साथ भारतीय वायुसेना

एयरलाइंस के साथ भारतीय वायुसेना के सी-17 ग्लोबमास्टर समेत बड़े विमानों को भारतीयों को निकालने के लिए लगाया गया।

23,000 से ज्यादा लोग भारत लाए गए यूक्रेन से युद्ध के हालात के बीच।

90 उड़ानों का संचालन किया गया ऑपरेशन गंगा के तहत।

- 76 नागरिक विमान।
- 14 भारतीय वायु सेना के विमान।

18 देशों के 147 नागरिकों को भी ऑपरेशन गंगा में यूक्रेन से लाया गया।

आपकी पीढ़ी एक तरह से खुशनसीब है कि उसे पहले वाली 'डिफेंसिव' और 'डिपेंडेंट' मनोविज्ञान का नुकसान नहीं उठाना पड़ा। लेकिन, देश में अगर ये बदलाव आया है तो इसका सबसे पहला क्रेडिट भी आप सभी को जाता है, हमारे युवा को जाता है। अब आप देखिए, उदाहरण के तौर पर जिन सेक्टर्स में देश पहले अपने पैरों पर आगे बढ़ने के बारे में सोचता भी नहीं था, उन सेक्टर्स में अब हिंदुस्तान ग्लोबल लीडर बनने की राह पर है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

कोविड संकट के समय भी सजग

'ऑपरेशन सिंधु' हो या 'ऑपरेशन गंगा', सक्रियता और एक जिम्मेदार राष्ट्र होने के नाते बचाव कार्य को सजगता के साथ पूरा करना नए भारत की नई नीति बन चुकी है। जब मार्च 2020 में कोविड महामारी ने दुनिया भर में दस्तक दी, तब अपने नागरिकों के साथ-साथ अन्य देशों के नागरिकों को भी सकुशल स्वदेश वापस लाने के भारत सरकार के मिशन की दुनिया भर में सराहना हुई। जब दुनिया भर में लॉकडाउन की स्थिति उत्पन्न हो गई तब भारत ने अपने नागरिकों को वापस लाने के लिए 'वंदे भारत मिशन' और 'ऑपरेशन समुद्र सेतु' के जरिए लाखों भारतीयों की स्वदेश वापसी कराई। इस मिशन के जरिए चीन, ईरान, इटली और जापान जैसे देशों से न केवल भारतीयों को निकाला गया, बल्कि अन्य 50 से ज्यादा देशों के नागरिकों को भी भारत ने सुरक्षित निकाला। इतना ही नहीं, कोविड के समय जरूरी दवाईयों को 150 से अधिक देशों को भेजना हो या फिर कोविड से लड़ने के लिए बनी वैक्सीन दुनिया के अन्य देशों को उपलब्ध कराना, भारत ने सदैव दुनिया के सामने अनुकरणीय उदाहरण पेश किया। यही वजह है कि ब्राजील के राष्ट्रपति ने भारत को हनुमान की संज्ञा दी तो संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी भारत की प्रशंसा की। भारत के मानवीय दृष्टिकोण की वजह से दुनिया के देशों ने उसे ग्लोबल लीडर मानने में कोई संकोच नहीं दिखाया।

मिशन वंदे भारत

'अपनों' की घर वापसी का अब तक का सबसे बड़ा मिशन

- कोविड जैसी सदी की सबसे बड़ी महामारी के वक्त जब पूरी दुनिया ठहर गई और भारत में भी सख्त लॉकडाउन जैसा कदम उठाना पड़ा, तब विदेशों में फंसे भारतीयों की फिक्र करते हुए केंद्र सरकार ने मिशन वंदे भारत की शुरुआत की। यह मिशन वैश्विक स्तर पर सबसे बड़े स्वदेश वापसी प्रयासों में से एक रहा है।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरी कार्ययोजना तैयार की गई। 5 मई 2020 को विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने ट्वीट कर दूसरे देशों में संकट में फंसे भारतीयों को वहां दूतावास के संपर्क में रहने को कहा। विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के साथ विभिन्न राज्य सरकारों को इसमें शामिल किया गया। 7 मई 2020 को ऐतिहासिक और अब तक के सबसे बड़े मिशन की शुरुआत हुई।
- वंदे भारत मिशन के जरिए वायुमार्ग से तो ऑपरेशन समुद्र सेतु के जरिए समुद्र मार्ग से संकट में फंसे हर भारतीय को वापस स्वदेश लाने की शुरुआत हुई। पहले चरण में खाड़ी देशों और फिर 50 से अधिक देश से भारतीयों की वापसी कराई गई।

एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में भारत

भारत आज देशवासियों के साथ-साथ दुनिया के लिए भरोसे का प्रतीक बनकर उभरा है तो उसकी बड़ी वजह है- सशक्त नेतृत्व, जो अब उम्मीद और भरोसे के प्रतीक बन गए हैं। बीते वर्षों में पूरी दुनिया में जहां कहीं भारतीय मुसीबत में रहा, भारत अपने नागरिकों की मदद को प्राथमिकता देकर संकटमोचन के रूप में दिखा है। वर्ष 2015 में युद्धग्रस्त यमन से भारतीयों को निकालने के लिए मार्च-अप्रैल 2015 तक 'ऑपरेशन राहत' चलाया गया। इसमें करीब 2 हजार विदेशी नागरिकों को भी बचाया गया। उस समय भी यमन के बिगड़ते आंतरिक हालात को देखते हुए 19 और 25 मार्च को एडवाइजरी जारी कर यमन छोड़ने को कहा गया था। तब इस सलाह पर ध्यान नहीं दिया गया। ऐसे में हालात बिगड़ता देख भारत ने बचाव की रणनीति पर काम किया और प्रधानमंत्री मोदी ने सऊदी अरब के किंग से बातचीत की थी। भारत के विदेश मंत्रालय ने सजगता

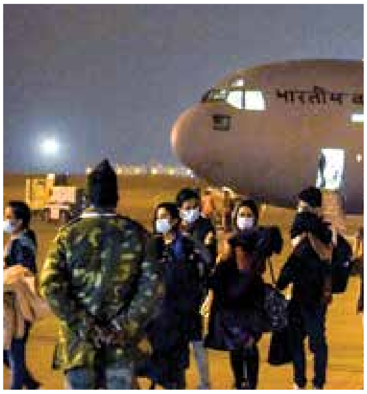

- ऑपरेशन समुद्र सेतु के दौरान भारतीय नौसेना पोत जलाश्व, ऐरावत, शार्दूल और मगर ने 23,000 किलोमीटर से अधिक की यात्रा की। इसके जरिए 3,992 भारतीय नागरिकों को सफलतापूर्वक वापस लाया गया।

- इतिहास के सबसे बड़े मिशन में से एक वंदे भारत के तहत 7 मई 2020 और मार्च 2022 के बीच 2.17 लाख उड़ान के माध्यम से 2.97 करोड़ से अधिक लोगों को वापस लाया गया। एयर बबल व्यवस्था के अंतर्गत वाणिज्यिक और चार्टर्ड दोनों उड़ानों ने सुनिश्चित किया कि फंसे हुए भारतीय और विदेशी नागरिक अपने घरों को लौट सकें।

कोविड के बीच अपनों को चीन से सुरक्षित लाए

वर्ष 2020 की शुरुआत में जब कोविड-19 महामारी शुरू हुई, भारत ने चीन के वुहान से 637 भारतीय नागरिक और मालदीव के 7 नागरिकों को निकालने के लिए तेजी से काम किया। शुरुआती कार्रवाई ने संभावित जोखिमों को रोकने में सहायता की और त्वरित संकट प्रबंधन का प्रदर्शन किया।

के साथ हेल्पलाइन और सहायता की व्यवस्था की। इस मिशन में भी वायु सेना, समुद्री जहाजों और व्यावसायिक विमानों को लगाया गया। इस मिशन में भारत ने अपने नागरिकों के अलावा 48 अन्य देश के लोगों को भी निकालने में मदद की।

सऊदी अरब में फंसे लोगों की वतन वापसी भी एक उदाहरण है। 19 जून, 2019 को ही मोदी सरकार ने सऊदी अरब में फंसे भारतीयों की सकुशल वतन वापसी कराई। दरअसल सऊदी अरब में दो कंपनियों की आपसी लड़ाई में सैंकड़ों भारतीय वहां फंस गए थे। मोदी सरकार की पहल पर 1,200 भारतीय वतन वापस लाए गए। वतन लौटे भारतीयों ने वापसी के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया। कतर में भी मौत की सजा सुनाए जाने के बाद अपने 8 पूर्व नौसैनिकों को रिहा करा पाने में सफलता से आम भारतीय के मन में एक नया विश्वास जागा है।

'पड़ोसी पहला मददगार' वाली सोच को चरितार्थ करते हुए भारत ने 25 अप्रैल 2015 को नेपाल में आए भीषण भूकंप के बाद एनडीआरएफ की टीमें भेजी जो 6 घंटे के भीतर नेपाल पहुंचीं और करीब 67 मिलियन डॉलर की सहायता भी दी। इस भूकंप की वजह से नेपाल में फंसे भारतीय लोगों को निकालने के लिए 'ऑपरेशन मैत्री' चलाया गया। वर्ष 2016 में दक्षिण सूडान में संघर्ष की घटनाओं को देखते हुए भारत ने अपने लोगों को वापस लाने के लिए 'ऑपरेशन संकटमोचन' चलाया, जिसमें 156 भारतीय और 2 नेपाली नागरिकों को सुरक्षित निकाला गया। इंडोनेशिया गणराज्य में भूकंप और सुनामी के शिकार लोगों के लिए 'ऑपरेशन समुद्र मैत्री' चलाया तो मोजाम्बिक में 2019 के तूफान के दौरान भारत ने मानवीय सहायता और आपदा राहत प्रदान की और 192 से अधिक लोगों को बचाया। इसी तरह 2021 में अफगानिस्तान में फंसे भारतीयों को सुरक्षित निकालने के लिए 'ऑपरेशन देवीशक्ति' चलाया। ईस्टर के मौके पर श्रीलंका में हुए आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री मोदी

जब इराक से 46 भारतीय नर्स को वापस लाया गया

जून 2014

जून 2014 में आईएसआईएस के इराक में हमलों के दौरान 46 भारतीय नर्स तिकरित के एक हॉस्पिटल में आतंकियों द्वारा बंधक बना ली गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक उच्च स्तरीय बैठक की। तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने संपर्क के हर स्तर पर काम किया। एनएसए अजीत डोभाल खुद इराक पहुंचे। आखिरकार नर्सों को बसों का इंतजाम कर इरबिल शहर लाया गया। यह नर्सें 5 जुलाई, 2014 को दिल्ली पहुंचीं। केरल के फंसे हुए कई लोगों को भी युद्धग्रस्त इराक से निकाला गया।

ऑपरेशन संकटमोचन
153 लोगों को स्वदेश लाया गया

जुलाई 2016

वर्ष 2016 में हिंसा की आग में झुलस रहे दक्षिण सूडान में करीब 600 भारतीय फंस गए। भारत सरकार ने इन्हें निकालने के लिए ऑपरेशन संकटमोचन की शुरुआत की। तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री वीके सिंह सी-17 ग्लोबमास्टर के साथ खुद राजधानी जूबा पहुंचे। 153 लोगों को इस ऑपरेशन के दौरान एयरलिफ्ट कर वापस लाया गया। इनमें 2 नेपाली नागरिक भी शामिल थे। कुछ लोग भारत की एडवाइजरी जारी होते ही खुद लौट आए थे, जबकि कारोबार के चलते 300 लोग वहीं रुके रहे।

ऑपरेशन देवी शक्ति
अफगानिस्तान संकट के बीच घर पहुंचे भारतीय

- वर्ष 2021 में जब सत्ता परिवर्तन के साथ अफगानिस्तान में संकट की स्थिति पैदा हुई, तब काबुल एयरपोर्ट की तस्वीरें पूरी दुनिया ने देखीं। इस संकट में फंसे हुए भारतीयों को स्वदेश लाने के लिए ऑपरेशन देवी शक्ति की शुरुआत की गई।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उच्च स्तरीय बैठक कर सभी भारतीयों को स्वदेश लाने के साथ शरण के इच्छुक हिंदू और सिखों को अफगानिस्तान से निकालने के निर्देश दिए। 40 विमानों के साथ इस ऑपरेशन की शुरुआत की गई।
- ऑपरेशन देवी शक्ति में 206 अफगान नागरिक और 448 भारतीय नागरिकों को भारत लाया गया। 438 भारतीयों समेत 565 लोगों को अगस्त की शुरुआत में ही भारत लाया गया। इसके बाद एयर इंडिया और वायुसेना के सी-17 ग्लोबमास्टर ने इन्हें एयरलिफ्ट कर भारत पहुंचाया।

- सरकार ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पांच पवित्र स्वरूपों की वापसी सुनिश्चित की, जिन्हें एक अलग उड़ान से बड़ी श्रद्धा के साथ वापस लाया गया।

पहले विश्व नेता थे, जिन्होंने उस देश की यात्रा की। श्रीलंका में भारत की आपात एंबुलेंस सेवा अब भी देश के सभी 9 प्रांतों में उपलब्ध है।

संकट में दुनिया की मदद को भी तत्पर भारत

वसुधैव कुटुंबकम् की भावना के साथ भारत ने सुनामी और ज्वालामुखी विस्फोट से प्रभावित टोंगा को तत्काल राहत, पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए 2 लाख डॉलर की आर्थिक सहायता दी। 2018 में चक्रवात गीता से हुई तबाही के समय भी भारत टोंगा के साथ मजबूती से खड़ा था। भारत ने संकट की घड़ी में मालदीव की भी मदद की। चीन ने पहले तो मालदीव को कर्ज देकर जाल में फंसाया फिर कर्ज की वापसी के लिए नोटिस थमा दिया। ऐसे में भारत ने मालदीव को आर्थिक संकट से उबरने के लिए 25 करोड़ डॉलर (1,840 करोड़ रुपये) की आर्थिक सहायता दी। इस आर्थिक मदद पर वहां के तत्कालीन राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सालिह ने भारत और प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया। थाईलैंड में थैल लुआंग गुफा में अंडर-16 फुटबाल टीम के 12 बच्चे और कोच के फंसने के बाद पूरी दुनिया में हड़कंप मच गया। दुनिया में अब तक के सबसे जोखिम भरे राहत और बचाव अभियान में ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, अमेरिका समेत तमाम देशों ने अपने विशेषज्ञ भेजे, पर इनसे कोई बात नहीं बनी तो थाईलैंड की सरकार ने भारत की सरकार से मदद की गुहार की। भारत सरकार ने बगैर

मार्च 2015

यमन में ऑपरेशन राहत

जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक फोन से निकला भारतीयों की वापसी का रास्ता

- 18 विशेष विमान और सी-17 ग्लोबमास्टर के जरिए सना एयरपोर्ट से 2,900 नागरिक को एयरलिफ्ट किया गया। अदन बंदरगाह से भारतीय नौसेना ने 1,670 लोगों के साथ-साथ एक अन्य जगह से 349 लोगों को निकाला।

- 5,600 लोगों को इस ऑपरेशन के दौरान बचाया गया। इनमें 4,640 भारतीयों समेत 41 देश के 960 नागरिक शामिल थे।

गृहयुद्ध की आग में लंबे समय से झुलस रहे यमन में मार्च 2015 में सऊदी अरब और उसके सहयोगियों ने सैन्य दखल की शुरुआत की। इस दौरान यहां फंसे हुए 4 हजार से अधिक भारतीयों और कई विदेशी नागरिकों को निकालने के लिए भारतीय सशस्त्र बलों ने यहां ऑपरेशन राहत शुरू किया। उच्च स्तरीय बैठक के बाद प्रधानमंत्री मोदी के निर्देश पर तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और विदेश राज्य मंत्री जनरल वीके सिंह ने कमान संभाली। इस ऑपरेशन की पूरी कहानी खुद विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने आसियान सम्मेलन के दौरान सुनाई। उन्होंने बताया कि वह प्रधानमंत्री मोदी के पास गई और उन्हें सुझाव दिया कि सऊदी के साथ उनका बेहतर संबंध काम आ सकता है। प्रधानमंत्री ने सऊदी के शाह को फोन कर 1 हफ्ते तक बमबारी रोक भारतीयों को निकालने में मदद का आग्रह किया। सऊदी अरब के शाह पीएम मोदी की बात तो नहीं टाल सकते थे, पर वे बमबारी रोकने को तैयार नहीं थे। लेकिन वह एक हफ्ते तक रोज सुबह 9 से 11 बजे तक बमबारी रोकने पर सहमत हो गए। इसके बाद यमन सरकार से संपर्क कर अदन बंदरगाह और सना हवाई अड्डा खोलने का अनुरोध किया ताकि नागरिकों को एक हफ्ते तक रोजाना 2 घंटे तक मुस्तैदी से जिबूती पहुंचाया जा सके।

समय गंवाए भारतीय इंजीनियरों को मदद करने का निर्देश दिया। भारत सरकार के आदेश पर केबीएस का हैवी फ्लडपंप महाराष्ट्र के सांगली जिले स्थित किर्लोस्कर समूह की कंपनी से भेजा गया। भारत से हैवी केबीएस फ्लडपंप थाईलैंड पहुंचने के बाद, गुफा में पानी का स्तर कम किया गया। पानी का स्तर कम होने के बाद ही गोताखोरों का काम आसान हुआ और तीन दिनों के कठिन ऑपरेशन के बाद सभी बच्चों और उनके कोच को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। भारत श्रीलंका के चाय बागान में काम कर रहे भारतीय मूल के लोगों के लिए आवासीय योजना के तहत बनाए गए एक हजार से अधिक घर सौंप चुका है। भारत द्वारा किसी भी देश में यह सबसे बड़ी आवासीय परियोजना है। श्रीलंका में रहने वाले भारतीय मूल के तमिल अधिकतर चाय और रबड़ बागानों में काम करते हैं और उनके पास उचित घरों का अभाव है। तुर्किए में भयानक भूकंप ने तबाही मचाई तो भारत ने 'ऑपरेशन दोस्त' चलाकर राहत-बचाव का अभियान चलाया।

विदेश नीति का आधार- राष्ट्र प्रथम

बीते 11 वर्ष में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने एक गतिशील और परिवर्तन आधारित विदेश नीति को आकार दिया है। जिसका मंत्र है- राष्ट्र प्रथम और विजन है- सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास। भारत की विदेश नीति-

ऑपरेशन कावेरी

सूडान से 4 हजार से ज्यादा भारतीयों की वतन वापसी

जब 2023 में सूडान में संघर्ष छिड़ा, तो भारत ने तुरंत ऑपरेशन कावेरी शुरू किया।

18 भारतीय वायुसेना की उड़ानें

20 वाणिज्यिक उड़ानें

5 भारतीय नौसेना के जहाजों की आवाजाही का उपयोग

136 विदेशी नागरिकों सहित कुल 4,097 लोगों को वापस लाया गया

इस अभियान के तहत चाड, मिस्र, इथियोपिया और दक्षिण सूडान जैसे पड़ोसी देशों से जमीनी रास्ते से 108 भारतीय नागरिकों को निकालने में भी कामयाबी मिली।

ऑपरेशन अजय

1,300 से ज्यादा लोगों को इजराइल से निकाला

वर्ष 2023 में इजराइल में संघर्ष के बीच, भारत ने एक बार फिर कार्रवाई की।

1,343 लोगों को वापस लाया गया छह विशेष उड़ानों से।

1,309 भारतीय नागरिक

20 नेपाली नागरिक

14 भारतीय मूल के विदेशी नागरिक (ओसीआई) कार्ड धारक

नेबरहुड फर्स्ट की नीति पर है। इसे एक्ट ईस्ट, थिंक वेस्ट और कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीतियों से सशक्त बनाया गया है। सरकार के विजन, भारत-प्रशांत क्षेत्र में कानून-आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समान विचारधारा वाले भागीदारों के साथ संबंध को मजबूत करने और क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा एवं विकास (सागर) डिजाइन किया गया है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए), आपदा रोधी संरचना गठबंधन (सीडीआरआई), पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली (लाइफ) और इंटरनेशल बिग कैट एलायंस (आईबीसीए) जैसी नई पहलों ने दुनिया के साथ भारत के बहुपक्षीय संबंधों को मजबूत किया है।

दुनिया भर में भारत की वैश्विक उपस्थिति का विस्तार करने के सरकार के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मिशन, वाणिज्य दूतावास और प्रतिनिधि कार्यालयों की संख्या बढ़ाने के लिए भी महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। भारत ने 1 दिसंबर 2022 को जी-20 की अध्यक्षता ग्रहण की। भारत की अध्यक्षता का विषय- वसुधैव कुटुम्बकम् या एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य की अवधारणा पर रही, जिसकी व्यापक रूप से सराहना की गई है। 60 शहर में 200 से अधिक बैठक ने जी-20 आयोजन के लिए अभूतपूर्व वातावरण बनाया। इसका परिणाम हुआ कि भारत की जी-20 अध्यक्षता सही अर्थों में जन-केंद्रित बनी और एक राष्ट्रीय प्रयास के रूप में उभरी। ई-शासन से जुड़े तरीकों के उपयोग के माध्यम से भारत के वाणिज्य दूतावास परिचालन को वैश्विक स्तर पर सबसे तेज, सबसे पारदर्शी और सहज बनाया गया है। भारत ने विदेशों में भारतीय श्रमिकों के

कतर से भारतीय नौसेना के सभी आठ पूर्व नौसैनिक रिहा कराए

कतर की अदालत ने 12 फरवरी 2024 को भारतीय नौसेना के सभी आठ पूर्व नौसैनिकों को रिहा कर दिया। इसमें से सात नौसैनिक भारत लौट आए हैं।

8 पूर्व नौसैनिकों पर जासूसी करने के आरोप लगाए गए थे और वे कतर की जेल में कैद थे।

इन्हें कतर की अदालत ने मौत की सजा भी सुना दी थी, जिसके बाद इनकी रिहाई मुश्किल हो गई थी। 26 अक्टूबर 2023 को कतर की अदालत ने जब इन पूर्व नौसैनिकों को मौत की सजा सुनाई तब समूचा देश मोदी सरकार के साथ खड़ा था और प्रार्थना कर रहा था कि इनकी जल्द रिहाई हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कूटनीतिक प्रयासों से 12 फरवरी 2024 को इनकी रिहाई हुई।

ऑपरेशन इंद्रावती के साथ हैती में अभियान

मार्च 2024 में हैती में नागरिक अशांति फैल गई। भारत ने अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तुरंत ऑपरेशन इंद्रावती शुरू किया। हेलीकॉप्टर का उपयोग करके सत्रह भारतीय नागरिकों को सुरक्षित रूप से डोमिनिकन गणराज्य ले जाया गया, जो भारत की जन-केंद्रित विदेश नीति में एक और सफलता थी।

हितों की रक्षा के लिए सामाजिक सुरक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। छात्र और पेशेवरों के पारस्परिक आगमन को बढ़ाने के लिए समझौते हुए हैं। साथ ही, अवैध प्रवासन को रोकने के लिए कई देशों के साथ समझौते हुए हैं।

मानवीय संकट के दौरान प्रयासों के समन्वय के लिए विदेश मंत्रालय में एक विशेष प्रभाग के रूप में त्वरित कार्रवाई प्रकोष्ठ की स्थापना ने आपदा प्रोटोकॉल को और अधिक संवेदनशील बनाया है। मानवीय संकट के समय भारत ने कदम उठाने वाले प्रथम राष्ट्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ऐसे प्रयासों के साथ भारत ने पिछले 11 वर्ष के दौरान विभिन्न राहत और निकासी अभियान चलाए है तो वहीं नागरिकों की सुरक्षा के लिए देश ने किसी भी हद तक जाने की प्रतिबद्धता दिखाई है। इसी साल 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत की इसी रीति और नीति की झलक दुनिया ने देखी। वहीं सूडान, इराक, अफगानिस्तान से लेकर ईरान में ऑपरेशन सिंधु तक चलाए गए बचाव अभियान नए भारत के सामर्थ्य का प्रतीक बने हैं। दुनिया और दुनिया भर में बसे भारतीयों को भी अब अहसास हो चुका है कि वह हर संकट में सुरक्षित हैं और उन्हें सकुशल स्वदेश वापस लाया जा सकता है, क्योंकि वह नए भारत के नागरिक हैं तो वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को सर्वोपरि रख भारत ने संकट के समय दुनिया के अन्य देशों की भी मदद कर एक जिम्मेदार राष्ट्र होने का उदाहरण पेश किया है। ■

ईएलआई से मिलेंगे 3.5 करोड़ रोजगार
1 लाख करोड़ से रिसर्च को बढ़ावा

बीते 11 साल में युवा भारत सरकार की नीतियों के केंद्र में हैं तो रिसर्च, इनोवेशन, स्पोर्ट्स के साथ कृषि जैसे सेक्टर शीर्ष प्राथमिकता में शामिल रहे हैं। अब एक बार फिर केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 3.5 करोड़ युवाओं को रोजगार देने के लिए पहली बार एंप्लॉयमेंट लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम को मंजूरी दी है। इसके अलावा मंत्रिमंडल के निर्णयों में शामिल हैं 1 लाख करोड़ रुपये के साथ रिसर्च डेवलपमेंट एंड इनोवेशन मिशन, राष्ट्रीय खेल नीति-2025, देश के अन्नदाताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय आलू केंद्र के साथ विकास कार्यों से जुड़े कई प्रोजेक्ट...

निर्णय : 99,446 करोड़ रुपये के साथ एंप्लॉयमेंट लिंक्ड इंसेंटिव (ईएलआई) स्कीम को मंजूरी।

प्रभाव : यह योजना खासतौर पर मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर पर फोकस करेगी। सरकार का मानना है कि इन योजनाओं से देश में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को मजबूती मिलेगी और शोध को भी बढ़ावा मिलेगा। इस योजना के दो हिस्से होंगे। पहला हिस्सा उन लोगों के लिए होगा जो पहली बार रोजगार शुरू कर रहे हैं। वहीं, दूसरा हिस्सा लगातार रोजगार देने वाली कंपनियों को समर्थन देने के लिए होगा। इस योजना का उद्देश्य दो वर्ष में देश में 3.5 करोड़ से अधिक नए रोजगार के अवसर सृजित करना है।

योजना का लाभ 01 अगस्त 2025 से 31 जुलाई, 2027 के बीच सृजित नौकरियों पर लागू होगा। इस योजना में दो भाग हैं, जिसमें भाग 1 पहली बार नौकरी करने वालों पर केंद्रित है और भाग 2 नियोक्ताओं पर केंद्रित है। बता दें कि ईएलआई योजना की घोषणा केंद्रीय बजट 2024-25 में प्रधानमंत्री की पांच योजनाओं के पैकेज के हिस्से के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य 4.1 करोड़ युवाओं को रोजगार, कौशल और अन्य अवसर प्रदान करना है, जिसका कुल बजट परिव्यय 2 लाख करोड़ रुपये है।

भाग 1

पहली बार काम करने वालों को दो किस्त में एक महीने का वेतन 15,000 रुपये तक मिलेगा। इस भाग से लगभग 1.92 करोड़ पहली बार नौकरी करने वाले कर्मचारियों को लाभ होगा।

भाग 2

यह भाग सभी क्षेत्रों में अतिरिक्त रोजगार सृजन को कवर करेगा, जिसमें विनिर्माण क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। नियोक्ताओं को 1 लाख रुपये तक के वेतन वाले कर्मचारियों के संबंध में प्रोत्साहन मिलेगा। सरकार नियोक्ताओं को कम से कम छह महीने तक निरंतर रोजगार वाले प्रत्येक अतिरिक्त कर्मचारी के लिए दो साल तक

प्रतिमाह 3,000 रुपये तक का प्रोत्साहन देगी। विनिर्माण क्षेत्र के लिए, प्रोत्साहन तीसरे और चौथे वर्ष तक भी बढ़ाया जाएगा।

निर्णय : रिसर्च, डेवलपमेंट और इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए रिसर्च, डेवलपमेंट और इनोवेशन (आरडीआई) योजना को मंजूरी।

प्रभाव : इसके तहत देश में रिसर्च को प्रोत्साहित किया जाएगा। इस योजना के लिए 1 लाख करोड़ रुपये का बजट तय किया गया है। रिसर्च, डेवलपमेंट और इनोवेशन को प्रोत्साहन देने वाली इस योजना को तैयार करने से पहले अनुसंधान राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन ने दुनिया के कई देशों के सफल शोध मॉडलों का अध्ययन किया। उसी से सीख लेते हुए भारत में यह नई योजना तैयार की गई है। सरकार का मानना है कि इससे देश में न केवल शोध को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि इनोवेशन के जरिए नए उद्योगों को भी मजबूती मिलेगी।

निर्णय : देश के खेल परिदृश्य को नया आकार देने के लिए राष्ट्रीय खेल नीति (एनएसपी) 2025 को स्वीकृति।

प्रभाव : नई नीति मौजूदा राष्ट्रीय खेल नीति, 2001 का स्थान लेगी। साथ ही, यह देश को वैश्विक खेल महाशक्ति के रूप में स्थापित करने और वर्ष 2036 ओलंपिक खेलों सहित अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए एक मजबूत दावेदार के तौर पर स्थापित करने में एक दूरदर्शी और रणनीतिक रोडमैप तैयार करेगी।

निर्णय : आगरा के सिंगना में अंतरराष्ट्रीय आलू केंद्र (सीआईपी) के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र की स्थापना को स्वीकृति।

प्रभाव : इस निवेश का मुख्य उद्देश्य आलू और शकरकंद की उत्पादकता, प्रबंधन और मूल्य संवर्धन में सुधार करके खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, किसानों की आय और रोजगार सृजन को बढ़ाना है। बीज उत्पादन से लेकर कीट प्रबंधन, सस्टेनेबल प्रोडक्शन और किसानों को प्रशिक्षण देने वाला यह केंद्र विश्व की बेहतरीन व्यवस्थाओं को अपनाने की दिशा में भी सहायक होगा।

निर्णय : पुणे मेट्रो रेल परियोजना के दूसरे चरण के दो कॉरिडोर को मंजूरी।

प्रभाव : यह चरण-1 के तहत मौजूदा वनाज-रामवाड़ी कॉरिडोर का विस्तार है। वनाज से चांदनी चौक (कॉरिडोर 2ए) और रामवाड़ी से वाघोली-विट्ठलवाड़ी (कॉरिडोर 2बी) बनाया जाएगा। यह दो एलिवेटेड कॉरिडोर 12.75 किलोमीटर तक फैले होंगे। इनमें 13 स्टेशन शामिल होंगे। परियोजना की अनुमानित लागत 3,626.24 करोड़ रुपये है।

लोकतंत्र को संरक्षित रखने का संकल्प

- देश में आपातकाल लगाये जाने के 50 वर्ष पूरा होने के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में 25 जून को आयोजित बैठक में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने उन अनगिनत व्यक्तियों की दमन युक्त पीड़ा को याद रखने और उनके त्याग को सम्मान देने का संकल्प लिया, जिन्होंने आपातकाल एवं भारतीय संविधान की भावना को कमतर किये जाने का विरोध किया था। 1974 में नवनिर्माण आंदोलन और संपूर्ण क्रांति अभियान को कुचलने के लिए तत्कालीन सरकार ने आपातकाल की ओर क्रूर कदम बढ़ाये थे।
- 25 जून को केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में दो मिनट का मौन रखकर उन लोगों को श्रद्धांजलि दी गई, जिनके संविधान प्रदत्त लोकतांत्रिक अधिकार छीन लिए गए थे। उन्हें अकल्पनीय भयावहता का सामना करना पड़ा था।
- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस बात की पुनः पुष्टि की कि भारत के लोगों का भारतीय संविधान और देश के लोकतांत्रिक मूल्यों में दृढ़ विश्वास है। युवाओं के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे उन लोगों से प्रेरणा लें जिन्होंने तानाशाही प्रवृत्तियों का प्रबल विरोध किया। हमारे संविधान एवं इसके लोकतांत्रिक ढांचे की रक्षा के लिए दृढ़ता से खड़े रहे। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आह्वान किया कि आइए, एक राष्ट्र के रूप में, हम अपने संविधान और इसकी लोकतांत्रिक एवं संघीय भावना को कायम रखने के अपने संकल्प को फिर से दोहराएं।

निर्णय : झरिया कोयला क्षेत्र में आग, भू-धंसाव तथा प्रभावित परिवारों के पुनर्वास से संबंधित मुद्दों से निपटने के लिए संशोधित झरिया मास्टर प्लान (जेएमपी) को मंजूरी।

प्रभाव : संशोधित जेएमपी योजना में पुनर्वासित परिवारों की स्थायी आजीविका के साधन उपलब्ध करने पर जोर दिया गया है। पुनर्वासित परिवारों की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए विशेष कौशल विकास और रोजगार परक उपाय किए जाएंगे। संशोधित योजना के कार्यान्वयन पर कुल 5,940 करोड़ रुपये से ज्यादा का खर्च आएगा।

निर्णय : तमिलनाडु में 1,853 करोड़ रुपये की लागत से 4-लेन परमकुडी-रामनाथपुरम खंड (एनएच-87) के निर्माण को मंजूरी।

प्रभाव : इस परियोजना को हाइब्रिड एन्युटी मोड पर विकसित किया जाएगा, जिसकी कुल लागत 1,853 करोड़ रुपये होगी। परियोजना के पूरा होने पर परमकुडी-रामनाथपुरम खंड क्षेत्रीय आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

बिहार के सीवान में विभिन्न विकास परियोजनाओं का शुभारंभ

बिहार की समृद्धि से देश की समृद्धि

धर्म और अध्यात्म से लेकर सियासत की नर्सरी के रूप में विख्यात बिहार ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहम योगदान दिया है। ऐसे समय में जब देश विकसित राष्ट्र के संकल्प पथ पर आगे बढ़ रहा है, बिहार का महत्व और बढ़ जाता है। समृद्ध भारत के लिए समृद्ध बिहार की इसी भूमिका का जिक्र कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 20 जून को सीवान में आयोजित कार्यक्रम में दीं 5,200 करोड़ रुपये से अधिक की सौगातें...

भारत में कभी बीमारू राज्य के तौर पर पहचाना जाने वाला बिहार आज विकास के पैमाने पर नए संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है तो इसमें अहम योगदान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ संकल्प का भी है। 2014 में प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद अपने 51वें बिहार दौरे में डॉ. राजेंद्र प्रसाद की पावन भूमि बिहार को नमन करते हुए पीएम मोदी ने केंद्र और राज्य सरकार के इन्हीं प्रयासों का जिक्र भी किया। उन्होंने कहा कि दुनिया भर के बड़े-बड़े समृद्ध देशों के नेता भारत की तेज प्रगति से बहुत प्रभावित हैं। वो भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक महाशक्ति बनते देख रहे हैं और निश्चित तौर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार को दी विकास परियोजना की कई सौगात

- पीएम मोदी ने 400 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली नई वैशाली-देवरिया रेल लाइन परियोजना का उद्घाटन किया। साथ ही, इस मार्ग पर एक नई ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाई।
- उत्तर बिहार में कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए मुजफ्फरपुर और बेतिया के रास्ते पाटलिपुत्र और गोरखपुर के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस को भी हरी झंडी दिखाई।
- 'मेक इन इंडिया - मेक फॉर द वर्ल्ड' के विजन को आगे बढ़ाते हुए गिनी गणराज्य को निर्यात के लिए मढ़ौरा रेल फैक्ट्री में निर्मित अत्याधुनिक लोकोमोटिव को हरी झंडी दिखाई।
- गंगा नदी के संरक्षण और कायाकल्प प्रतिबद्धता के अनुरूप, 1,800 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली नमामि गंगे परियोजना के तहत छह सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) का उद्घाटन।
- बिहार के विभिन्न शहरों में 3,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली जलापूर्ति, स्वच्छता और एसटीपी की आधारशिला। इसका उद्देश्य इन शहरों के नागरिकों को स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना है।
- क्षेत्र में बिजली के बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने के लिए बिहार में 500 मेगावाट क्षमता की बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (बीईएसएस) की आधारशिला। राज्य के 15 ग्रिड सबस्टेशनों पर स्टैंडअलोन बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली लगाए जा रहे हैं।
- पीएम मोदी ने बिहार में पीएम आवास योजना- शहरी के 53,600 से अधिक लाभार्थियों को पहली किस्त जारी की।
- पीएम आवास योजना- शहरी के 6,600 से अधिक पूर्ण हो चुके मकानों के गृह प्रवेश समारोह के अवसर पर कुछ लाभार्थियों को पीएम मोदी ने चाबियां भी सौंपी।

अब बिहार में बना इंजन, अफ्रीका की रेल चलाएगा। यह बहुत बड़े गर्व की बात है, मुझे पक्का विश्वास है बिहार, मेड इन इंडिया का एक बड़ा सेंटर बनेगा। यहां का मखाना, यहां के फल-सब्जियां तो बाहर जाएंगी ही, बिहार के कारखानों में बनने वाला सामान भी दुनिया के बाजारों तक पहुंचेगा। बिहार के नौजवान जो सामान बनाएंगे, वो आत्मनिर्भर भारत को ताकत देगा। *- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री*

पर इसमें बिहार की बहुत बड़ी भूमिका होने वाली है। बिहार समृद्ध होगा। देश की समृद्धि में भी बड़ी भूमिका निभाएगा। इस विश्वास का कारण बिहार के सभी लोगों का सामर्थ्य है। बिहार के सीवान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "मैं बिहारवासियों को विश्वास देने आया हूं, हमने भले ही बहुत कुछ किया हो, करते रहे हैं, करते रहेंगे। लेकिन, इतने से शांत होकर मोदी चुप रहने वाला नहीं है। अब बहुत हो गया, बहुत कर लिया जी नहीं, मुझे तो बिहार के लिए और भी बहुत कुछ करना है, आपके लिए करना है, यहां के गांव-गांव के लिए करना है, यहां के घर-घर के लिए करना है, यहां के हर नौजवान के लिए करना है।"

सिर्फ बीते 10-11 साल में बिहार में करीब 55 हजार किलोमीटर ग्रामीण सड़कें बनी हैं। डेढ़ करोड़ से ज्यादा घरों को बिजली के कनेक्शन से जोड़ा गया है। डेढ़ करोड़ घरों को पानी का कनेक्शन दिया गया है। 45 हजार से ज्यादा कॉमन सर्विस सेंटर बनाए गए हैं और आज बिहार के छोटे-छोटे शहरों में नए-नए स्टार्टअप खुल रहे हैं। पीएम मोदी ने मंच से हजारों करोड़ रुपया की योजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया। विकास की ये सारी परियोजनाएं बिहार को उज्ज्वल भविष्य की तरफ ले जाएंगी, समृद्ध बिहार बनाएंगी। सीवान, सासाराम, बक्सर, मोतिहारी, बेतिया और आरा जैसे बिहार के सारे इलाके फलें-फूलें, इस दिशा में ये परियोजनाएं बड़ी भूमिका निभाएंगी। इनसे गरीब, वंचित, दलित, महादलित, पिछड़े, अति पिछड़े, हर समाज का जीवन आसान होगा।

बिहार के रहने वाले हर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी बात होती है, उसका स्वाभिमान। बिहार के लोग कठिन से कठिन परिस्थिति में काम कर दिखा देते हैं। वह कभी अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं करते। पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि बीते एक दशक में रिकॉर्ड 25 करोड़ भारतीयों ने गरीबी को पराजित किया है। वर्ल्ड बैंक जैसी दुनिया की जानी-मानी संस्थाएं, भारत की इस बड़ी उपलब्धि की प्रशंसा कर रही हैं।

ओडिशा...भारत की विरासत का दिव्य सितारा

भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत में ओडिशा का अहम योगदान है तो साथ में पूर्वोदय से भारत उदय के विजन में भी राज्य की अहम भागीदारी है। भारत की विकास यात्रा में राज्य की भूमिका का जिक्र कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 20 जून को भुवनेश्वर में 18 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की सौगातें देते हुए ओडिशा को बताया भारत की विरासत का दिव्य सितारा....

भारत का पूर्वी भाग भले ही सांस्कृतिक और प्राकृतिक रूप से बेहद संपन्न हो, लेकिन पश्चिम या दक्षिण भारत की तरह औद्योगिक और बुनियादी विकास में कहीं पिछड़ गया था। पूर्वोदय से भारत उदय का विजन इसी अंतर को खत्म को करने की दिशा में अहम कदम है तो इसमें भगवान जगन्नाथ की पावन भूमि ओडिशा की भूमिका भी बेहद अहम है। राज्य सरकार का एक वर्ष पूरा होने पर राजधानी भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका जिक्र करते हुए कहा कि ओडिशा सैकड़ों वर्ष से भारतीय सभ्यता, संस्कृति को समृद्ध करता रहा है। इसलिए आज जब विकास और विरासत का

राष्ट्रपति ट्रंप ने दिया न्योता, पीएम मोदी बोले- मुझे महाप्रभु की धरती पर जाना है

प्रधानमंत्री मोदी ने दो दिन पहले कनाडा में जी-7 के शिखर सम्मेलन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप से फोन पर हुई बातचीत का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने मुझसे कहा कि आप कनाडा तो आए ही हैं, वॉशिंगटन होकर जाइए। साथ में खाना खाएंगे, बातें करेंगे। पीएम मोदी बोले, 'मैंने उन्हें निमंत्रण के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि मेरा महाप्रभु की धरती पर जाना बहुत जरूरी है।'

ओडिशा में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास

- ओडिशा के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्धता के अनुरूप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 18,600 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया।
- यह परियोजनाएं पेयजल, सिंचाई, कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर, स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर, ग्रामीण सड़कें एवं पुल, राष्ट्रीय राजमार्गों के खंड और एक नई रेलवे लाइन सहित महत्वपूर्ण क्षेत्रों को कवर करने वाली है।
- बौध जिले में रेल संपर्क का विस्तार करते हुए पीएम मोदी ने नई ट्रेन सेवाओं को हरी झंडी दिखाई।
- स्वच्छ ऊर्जा और टिकाऊ परिवहन को बढ़ावा देने के लिए राजधानी क्षेत्र शहरी परिवहन प्रणाली के अंतर्गत 100 इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी दिखाई।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओडिशा विजन डॉक्यूमेंट जारी किया। यह विजन समावेशी विकास के लिए महत्वाकांक्षी और भविष्य के रोडमैप की रूपरेखा तैयार करेगा।
- प्रख्यात उड़िया लोगों के योगदान की याद में,'बारापुत्र ऐतिहासिक ग्राम योजना' पहल की शुरुआत। इसका उद्देश्य ओडिशा की विरासत का सम्मान करते हुए संग्रहालय, पुस्तकालय और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देना है।

राज्य में समृद्धि और आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में 16.50 लाख से अधिक लखपति दीदी का सम्मान करते हुए पीएम मोदी ने राज्य भर की सफल महिलाओं को सम्मानित किया।

मंत्र, भारत की प्रगति का आधार बना है, तब ओडिशा की भूमिका और बड़ी हो गई है। बीते एक वर्ष में ओडिशा ने 'विकास भी और विरासत भी' मंत्र को आत्मसात किया है। पीएम मोदी ने कहा कि 21वीं सदी के भारत के विकास को पूर्वी भारत से ही गति मिलेगी। ये पूर्वोदय का कालखंड है। एक साल पहले ओडिशा में सत्ता परिवर्तन के बाद इस अभियान में और गति आई है। ओडिशा के पारादीप से लेकर झारसुगुड़ा तक औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार हो रहा है। इससे राज्य में मिनरल्स और पोर्ट लेड इकोनॉमी को बल मिल रहा है। इतना ही नहीं, केंद्र सरकार ओडिशा में रोड, रेल और एयर कनेक्टिविटी पर हजारों करोड़ रुपये खर्च कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पारादीप में मेगा ड्यूएल फीड क्रैकर और डाउन-स्ट्रीम यूनिट की स्थापना हो, चंडिखोल में कच्चे तेल के भंडारण की सुविधा हो, गोपालपुर में एल.एन.जी टर्मिनल का निर्माण हो, ऐसे अनेक कदम ओडिशा को एक बड़े इंडस्ट्रियल स्टेट के रूप में स्थापित करेंगे। यहां पेट्रोलियम, पेट्रो-केमिकल्स, टेक्सटाइल और प्लास्टिक से जुड़े उद्योगों को बल मिलेगा। इससे छोटे और लघु उद्योगों का बहुत बड़ा नेटवर्क यहां बनेगा, यह नौजवानों के लिए रोजगार के लाखों नए अवसर लेकर आएगा।

पीएम मोदी ने कहा कि केंद्र की ऐसी कई योजनाएं हैं, जिनका पूरा लाभ पहले ओडिशा को नहीं मिल पाता था। आज केंद्र और राज्य, दोनों सरकार की योजनाओं का बेनिफिट लोगों को मिल रहा है। यही नहीं, माता-बहन, किसान और नौजवानों को जो गारंटी दी गई थी, उनको तेज गति से जमीन पर उतारा गया है। पीएम मोदी ने कहा कि सरकार की एक बहुत बड़ी उपलब्धि वंचितों के सशक्तीकरण की रही है। ओडिशा में तो बहुत बड़ी संख्या में हमारा जनजातीय समाज रहता है। दुर्भाग्य से अतीत में आदिवासी समाज को निरंतर उपेक्षा मिली, उनके हिस्से में पिछड़ापन रहा, गरीबी रही, अभाव रहा। हालांकि, बीते वर्षों में हमने आदिवासी समाज को हिंसा के माहौल से बाहर निकालकर, विकास के नए पथ पर ले जाने का काम किया है।

जी-7 में भारत की कूटनीतिक धमक

दुनिया से भारत का आह्वान...

आतंकवाद के खिलाफ एकजुट हो विश्व

दुनियाभर में राजनीतिक अस्थिरता के चुनौतीपूर्ण दौर में भारत आज एक ऐसा विशेष राष्ट्र बन कर उभरा है, जो दुनिया की किसी भी बड़ी शक्ति के मुकाबले ज्यादा महत्वाकांक्षी नजरिया रखता है तो वैश्विक चुनौतियों के हल का खास नजरिया भी उसके पास है। ब्रिक्स से लेकर जी-20 और कॉप से लेकर अन्य वैश्विक मंचों ने भारत की इस भूमिका को स्वीकार भी किया है। भारतीय कूटनीति की यही झलक दुनिया ने कनाडा में 16-17 जून को आयोजित जी-7 के शिखर सम्मेलन में भी देखी, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक एकजुटता का आह्वान...

वैश्विक अर्थव्यवस्था में 28 फीसदी से ज्यादा की हिस्सेदारी के साथ दुनिया के व्यापार में सबसे बड़ी हिस्सेदारी वाले अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, इटली, जर्मनी, जापान और ब्रिटेन जैसे 7 अहम देशों के समूह जी-7 की बैठक में भारत की बढ़ती भूमिका का अंदाजा बिना सदस्यता के भी आमंत्रित मेहमान के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लगातार छठवें वर्ष शामिल होने से लगाया जा सकता है। कनाडा के अल्बर्टा प्रांत के कननास्किस में आयोजित जी-7 के 51वें शिखर सम्मेलन की शुरुआत उस समय हुई जब रूस-यूक्रेन के बाद दुनिया की

10 घंटे के भीतर 12 मुलाकात

वैश्विक नेताओं के साथ दिखी पीएम मोदी की बॉन्डिंग

जी-7 शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कनाडा में 10 घंटे के भीतर 12 वैश्विक नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकों में हिस्सा लिया। जर्मन चांसलर फ्रेडिरिक मर्ज, मैक्सिको की राष्ट्रपति डॉ. क्लाउडिया शिनबाम पार्डो, ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिली रामफोसा, यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन, जापान के पीएम शिगेरू इशिबा, इटली की पीएम जियोर्जिया मेलोनी, ब्रिटेन के पीएम कीर स्टार्मर, कोरिया के राष्ट्रपति ली जे-म्युंग और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज से साथ उनकी खास बॉन्डिंग दिखी।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने पीएम मोदी ने उठाए कुछ अहम सवाल

- क्या देश आतंकवाद से उत्पन्न गंभीर खतरे को तभी समझेंगे जब वे इसका निशाना बनेंगे?
- आतंकवाद के अपराधियों और इसके पीड़ितों की बराबरी कैसे की जा सकती है?
- क्या वैश्विक संस्थाएं आतंकवाद के प्रति मूकदर्शक बनी रहेंगी?

भारत-कनाडा में जल्द बहाल होंगे उच्चायुक्त

भारत के साथ कुछ दिनों से चल रही तल्खी के बीच सत्ता परिवर्तन के बाद कनाडा के रुख में भी बदलाव आया है। कनाडा के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री मार्क कार्नी के साथ पीएम मोदी की मुलाकात में दोनों देशों में उच्चायुक्तों को फिर बहाल करने पर सहमति बनी। तल्खी के बीच दोनों देशों ने अपने उच्चायुक्तों को वापस बुला लिया था। साथ ही, दोनों देशों ने साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, कानून के शासन का सम्मान और संप्रभुता व क्षेत्रीय अखंडता के सिद्धांतों को बनाए रखने पर बल दिया। दोनों देश के संबंधों में गति लाने और विश्वास बहाली के लिए वरिष्ठ मंत्रिस्तरीय संबंधों को फिर से शुरू करने पर भी जोर दिया।

निगाहें इजराइल और ईरान के संघर्ष पर टिकी हुई थीं। ऐसे मौके पर जी-7 के आउटरीच सत्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अनिश्चितता और संघर्षों ने ग्लोबल साउथ के देशों पर बहुत बुरा प्रभाव डाला है। सुरक्षा चुनौतियों पर बल देते हुए पीएम मोदी ने देशों से आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई को मजबूत करने का आह्वान किया।

भारत ने न तो कभी मध्यस्थता स्वीकारी थी, न स्वीकार करता है और न कभी करेगा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ पीएम मोदी की बातचीत

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इजराइल-ईरान संघर्ष के बीच जी-7 शिखर सम्मेलन से जल्दी लौटने की वजह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुलाकात नहीं हो सकी। भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने बताया कि राष्ट्रपति ट्रंप के आग्रह पर पर दोनों नेता के बीच फोन पर लगभग 35 मिनट बातचीत हुई। इस बातचीत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की पाकिस्तान के साथ बातचीत के मुद्दे पर अपनी नीति को स्पष्टता के साथ रखते हुए कहा कि इस मामले में भारत ने किसी भी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता न तो स्वीकार की थी, न करता है और न भविष्य में कभी करेगा। उन्होंने सीधे शब्दों यह भी कहा कि पाकिस्तान के हर गोली का जवाब गोले से दिया जाएगा और ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है।
- दोनों नेताओं के बीच हुई बातचीत का ब्योरा देते हुए भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप को स्पष्ट रूप से कहा गया कि 22 अप्रैल के बाद भारत ने आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई करने का अपना दृढ़ संकल्प पूरी दुनिया को बता दिया था। पीएम मोदी ने कहा कि 6-7 मई की रात को भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में सिर्फ आतंकी ठिकानों को ही निशाना बनाया था। भारत के एक्शन बहुत ही नपातुला, सटीक और नॉन एस्केलेटरी थे। साथ ही, भारत ने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि पाकिस्तान की गोली का जवाब भारत गोले से देगा।
- मिस्री के अनुसार, 9 मई की रात को अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने पीएम मोदी को फोन किया था और वेंस ने कहा था कि पाकिस्तान भारत पर बड़ा हमला कर सकता है। तब पीएम मोदी ने उन्हें साफ शब्दों में बताया था कि यदि ऐसा होता है, तो भारत उससे भी बड़ा जवाब देगा। 9-10 मई की रात को पाकिस्तान के हमले का भारत ने बहुत सशक्त जवाब दिया और पाकिस्तान की सेना को बहुत नुकसान पहुंचाया। उसके एयरबेस को ऑपरेशन योग्य नहीं रहने दिया। भारत के मुंहतोड़ जवाब के कारण पाकिस्तान को भारत से सैन्य कारवाई रोकने का आग्रह करना पड़ा।

उन्होंने कहा कि पहलगाम आतंकी हमला सिर्फ भारत पर नहीं बल्कि पूरी मानवता पर हमला था। उन्होंने आतंकवाद का समर्थन और उसे बढ़ावा देने वाले देशों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की बात कही। साथ ही उन्होंने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में विश्व विरादरी को यह संदेश दिया कि आतंकवाद से निपटने में कोई दोहरा मापदंड नहीं होना चाहिए। आतंकवाद का समर्थन करने वालों को भी भी

भारत-अमेरिका ट्रेड डील या पाकिस्तान के साथ मध्यस्थता पर नहीं हुई थी कोई बात

विदेश सचिव के मुताबिक, पीएम मोदी ने राष्ट्रपति ट्रंप को स्पष्ट रूप से कहा कि इस पूरे घटनाक्रम के दौरान कभी भी, किसी भी स्तर पर भारत-अमेरिका ट्रेड डील या अमेरिका द्वारा भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता जैसे विषयों पर बात नहीं हुई थी। सैन्य कार्रवाई रोकने की बात सीधे भारत और पाकिस्तान के बीच, दोनों सेनाओं के वर्तमान चैनल के माध्यम से हुई थी। पाकिस्तान के ही आग्रह पर हुई थी। राष्ट्रपति ट्रंप ने आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई के प्रति समर्थन व्यक्त किया। पीएम मोदी ने यह भी सष्ट किया कि भारत अब आतंकवाद को प्रॉक्सी वार नहीं, युद्ध के रूप में ही देखता है और ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम की वजह से नहीं गए अमेरिका

राष्ट्रपति ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी से पूछा कि क्या वे कनाडा से वापसी में अमेरिका रुक कर जा सकते हैं। पूर्व-निर्धारित कार्यक्रमों के कारण, प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी असमर्थता व्यक्त की। दोनों लीडर्स ने तय किया कि वे निकट भविष्य में मिलने का प्रयास करेंगे। पीएम मोदी ने **QUAD** की अगली बैठक में राष्ट्रपति ट्रंप को आमंत्रित किया जिसे उन्होंने स्वीकार किया।

दो दशक में पहली बार साइप्रस पहुंचे भारतीय पीएम

जी-7 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15-16 जून को साइप्रस दौरे पर पहुंचे। दो दशक से अधिक समय में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह साइप्रस की पहली यात्रा है। साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलिडेस खुद पीएम मोदी को रिसीव करने एयरपोर्ट पहुंचे। इससे पहले 1983 में पीएम इंदिरा गांधी और अक्टूबर, 2002 में पीएम अटल बिहारी वाजपेयी ने साइप्रस का दौरा किया था। प्रधानमंत्री मोदी और साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलिडेस के बीच द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर व्यापक चर्चा हुई। दोनों पक्ष के बीच नियमित तौर पर राजनीतिक वार्ता, संप्रभुता और शांति के लिए एक-दूसरे को समर्थन, सुरक्षा, रक्षा और संकट के समय सहयोग, कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय सहयोग, यूरोपीय संघ-भारत की रणनीतिक भागीदारी, नवाचार, प्रौद्योगिकी, आवागमन, पर्यटन और जन-जन के बीच संबंध को मजबूत करने पर सहमति बनी। साइप्रस ने पीएम नरेंद्र मोदी को देश के सर्वोच्च सम्मान 'ग्रैंड क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ मकारियोस III' से भी नवाजा। राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलिडेस ने राष्ट्रपति भवन में उन्हें यह सम्मान दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह साइप्रस और भारत की मित्रता की मुहर है।

मध्य और दक्षिण-पूर्वी यूरोप में क्रोएशिया हो सकता है भारत का प्रवेश द्वार

अपने विदेश दौरे के अंतिम चरण में 18 जून को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी क्रोएशिया पहुंचे। यह भारत के किसी भी प्रधानमंत्री की पहली क्रोएशिया यात्रा थी। पीएम मोदी और क्रोएशिया के प्रधानमंत्री आंद्रेज प्लेंकोविच की जगरेब में मुलाकात हुई। इस अवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि क्रोएशिया मध्य और दक्षिण-पूर्वी यूरोप में भारत के प्रवेश द्वार के रूप में काम कर सकता है। दोनों नेता भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारे के माध्यम से कनेक्टिविटी में सुधार के महत्व पर सहमत हुए। क्रोएशिया के प्रधानमंत्री को पीएम मोदी ने सुझाव दिया कि आप भारत की कुशल प्रतिभा का लाभ उठा सकते हैं।

पुरस्कृत नहीं किया जाना चाहिए। प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए भारत के मानव-केंद्रित दृष्टिकोण पर विस्तार से बात करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि किसी भी प्रौद्योगिकी को प्रभावी बनाने के लिए आम लोगों के जीवन से जोड़ना चाहिए। एआई के युग में महत्वपूर्ण खनिजों की सुरक्षित और लचीली आपूर्ति श्रृंखला होना महत्वपूर्ण है। ▪

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

मूल्य आधारित नागरिक निर्माण का आधार

वैदिक सिद्धांतों में कहा गया है - 'सा विद्या या विमुक्तये'; अर्थात् ज्ञान वही है जो मुक्ति की ओर ले जाए। लेकिन, भारत में लंबे समय तक ज्ञान का अर्थ रोजगार से जोड़कर केवल सैद्धांतिक शिक्षा पद्धति की ओर ध्यान दिया गया। इसीलिए एक ऐसी नीति की जरूरत थी, जो न केवल स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक के स्तर में वर्तमान की जरूरतों को ध्यान में रखे, बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं को शिक्षा के साथ जोड़ते हुए कुशल युवा तैयार करे। इसी दिशा में अहम कदम उठाते हुए केंद्र सरकार ने 3 दशक से ज्यादा के लंबे इंतजार को खत्म करते हुए 29 जुलाई 2020 को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी दी। उद्देश्य है, शिक्षा में मूल्यों के साथ कुशल पेशेवर, संतुष्ट नागरिक और रोजगार उत्पन्न करने वाले युवाओं को तैयार कर एक ऐसा भारत बनाना, जो बने हमारे सामूहिक सपनों का प्रतिबिंब...

भारत के युवाओं में मेधा की कभी कमी नहीं रही। लेकिन, दुर्भाग्य से देश में ऐसी व्यवस्था बना दी गई, जिसमें पढ़ाई का मतलब केवल और केवल नौकरी ही था। शिक्षा में ये विकार गुलामी के कालखंड में अंग्रेजों ने अपनी जरूरतों को पूरा करने के साथ अपने लिए एक सेवक वर्ग तैयार करने के उद्देश्य से किया था। आजादी के बाद समय-समय पर इसमें थोड़ा बहुत बदलाव हुआ, लेकिन बहुत सारा फिर भी रह गया। अमृत पीढ़ी के संकल्पों की सिद्धि के लिए शिक्षा प्रैक्टिकल और इंडस्ट्री ओरिएंटेड हो, इसे ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को स्वीकृति दी गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल आधार शिक्षा को संकुचित सोच के दायरों से बाहर निकालना और उसे 21वीं सदी के आधुनिक विचारों से जोड़ना है।

भारत ने बीते 5 वर्ष में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने की दिशा में कई ठोस कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद इस नीति से जुड़े 25 से अधिक सेमिनार

2030-40 के दशक के बाद फिर होगी समीक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यांवयन के लिए समयसीमा के साथ-साथ कार्यप्रणाली भी दी गई है। इसमें यह प्रावधान किया गया है कि 2030-40 के दशक में पूरी शिक्षा नीति परिचालन मोड में होगी। इसके बाद एक और व्यापक समीक्षा की जाएगी। यही वजह है कि शिक्षा मंत्रालय, राज्य सरकार, शिक्षा से संबंधित मंत्रालय और विभाग, स्कूल-कॉलेज आदि ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यांवयन के लिए पहल कर उस पर तेजी से काम करना शुरू कर दिया है।

बदलाव...जो जरूरी थे

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए उठाए ये कदम

1. एनसीईआरटी द्वारा तैयार बुनियादी अध्ययन और स्कूली शिक्षा के लिए नेशनल करिकुलम की रूपरेखा शिक्षा मंत्रालय की तरफ से जारी की जा चुकी है।
2. भारत में 3 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए पहली बार एकीकृत नेशनल करिकुलम की रूपरेखा तैयार की गई, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सुझाए गए स्कूली शिक्षा के लिए 5+3+3+4 के अनुसार है। इसके तहत शैक्षणिक संचरना यानी आधारभूत चरण में 5 वर्ष, प्रारंभिक और मध्य चरण में 3-3 वर्ष और माध्यमिक चरण में 4 वर्ष शामिल है।
3. नेशनल करिकुलम के अनुरूप कक्षा 1 और 2 के लिए जुलाई, 2023 में और कक्षा 3 और 6 के लिए शैक्षणिक सत्र 2024-25 में नई पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं।
4. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने अपने स्कूलों को सलाह दी है कि वे पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति को 21वीं सदी के कौशल के साथ एकीकृत करें।
5. सीबीएसई ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजाइन थिंकिंग और डेटा साइंस जैसे नए विषय भी शामिल किए हैं।
6. पाठ्यक्रम भार को कम करने के लिए सीबीएसई ने वर्ष 2022-23 के लिए अपना पाठ्यक्रम कटौती कर कम सामग्री के साथ जारी किया था।
7. शिक्षा नीति के तहत देश के 90 से अधिक विश्वविद्यालय ने एनसीसी को इलेक्टिव सब्जेक्ट के रूप में शुरू किया है।
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति टेक्नॉलॉजी के लिए जरूरी माइंडसेट तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली है। इसके लिए अटल टिंकरिंग लैब और अटल इंक्यूबेशन सेंटर का एक बहुत बड़ा नेटवर्क देश में तैयार किया जा रहा है।
9. समग्र शिक्षा योजना 2.0 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप रि-डिजाइन किया गया है जो 2025-26 तक चालू रहेगी।

में शामिल हुए हैं, इस पर शिक्षा मंत्री और शिक्षाविदों के साथ ही स्टेकहोल्डर से बात की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में तय किए गए विषयों को शत-प्रतिशत साकार कैसे किया जाए, इस दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा शिक्षा में सार्वजनिक निवेश में पर्याप्त वृद्धि करते हुए इसे जीडीपी के 6% तक पहुंचाने की स्पष्ट रूप से समर्थन एवं परिकल्पना की गई है। उसी दिशा में शिक्षा मंत्रालय सहित उससे जुड़े बजट में वृद्धि की जा रही है।

हर कदम के लिए अलग पहल

- **बाल वाटिका:** कक्षा-एक में प्रवेश करने वाले बच्चों के लिए प्रारंभिक कक्षा है। करीब 6 लाख स्कूलों में बाल वाटिका है।
- **विद्या प्रवेश:** तीन महीने के प्ले आधारित स्कूल तैयारी के लिए मॉड्यूल। यह 12 सप्ताह का अनिवार्य वार्षिक कैलेंडर का हिस्सा है। शैक्षणिक सत्र 2024-25 में 8.94 लाख स्कूल के एक करोड़ छात्रों ने विद्या प्रवेश कार्यक्रम में भाग लिया।
- **निपुण भारत:** कक्षा 2 के अंत तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए राष्ट्रीय पहल।
- **पीएम ई विद्या:** डिजिटल, ऑनलाइन और ऑन एयर शिक्षा के प्रयासों का एकीकृत प्लेटफॉर्म।
- **दीक्षा:** ई-बुक और ई-कंटेंट वाला वन नेशन-वन डिजिटल प्लेटफॉर्म। दीक्षा पर 7157 ई टेक्स्ट बुक प्रकाशित किए गए हैं। ई सामग्री 126 भारतीय भाषा और 7 विदेशी भाषा में उपलब्ध है।
- **स्वयंप्रभा:** 12 डीटीएच चैनल इंटरनेट रहित लोगों तक पहुंचने और उनकी सहायता के लिए शुरू किए गए हैं। इन चैनल को 88 हजार से अधिक वीडियो सामग्री के साथ 200 चैनल तक बढ़ा दिया गया है। 29 भाषा में 25 हजार से अधिक घंटे का प्रसारण किया जा चुका है।
- **जादुई पिटारा:** बुनियादी चरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा और 3 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए बनाई गई खेल सामग्री।
- **परख:** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-माध्यमिक स्तर तक की संपूर्ण शैक्षिक यात्रा को सहायता करना।
- **नव भारत साक्षरता कार्यक्रम या उल्लास:** 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी निरक्षकों को लक्षित करने वाली योजना का कार्यांवयन।
- **प्राइमर्स:** युवा एवं वयस्क शिक्षार्थियों के बीच भाषा सीखने को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण सामग्री। फरवरी, 2025 तक 104 प्राइमर्स लॉन्च किए गए हैं। यह एनसीईआरटी और दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध हैं।
- **निष्ठा:** शिक्षकों की योग्यता बढ़ाने, नवीन शैक्षणिक प्रथाओं को बढ़ावा देने और शिक्षा में टेक्नोलॉजी को एकीकृत करने के साथ ही शिक्षण गुणवत्ता में सुधार कर जीवंत, समावेशी और भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली तैयार करने वाला कार्यक्रम। इसमें 12 प्रशिक्षण मॉड्यूल हैं। इसमें 1.26 लाख से अधिक मास्टर ट्रेनर प्रमाणित किए गए हैं।
- **4 वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम:** बीते दो वर्ष में इस कार्यक्रम के तहत 64 संस्थान को 6,100 छात्रों के प्रवेश के साथ मान्यता दी है।
- **राष्ट्रीय मेंटरिंग मिशन** स्कूल शिक्षकों को मेंटरिंग प्रदान करने के लिए इच्छुक उत्कृष्ट पेशेवरों को ध्यान में रखकर 9 मार्च, 2024 को इस मिशन पर ब्लूबुक जारी की गई।

क्यूएस विश्व रैंकिंग में हुआ सुधार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के बाद से भारत में उच्च शिक्षा के स्तर में तेजी से सुधार आया है। हर साल दुनियाभर के विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन करने वाली क्वाक्वेरेली साइमंड्स (क्यूएस) रैंकिंग में भी इसे देखा जा सकता है।

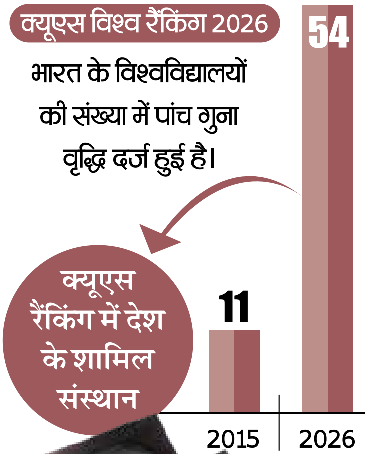

8 भारतीय विश्वविद्यालयों को पहली बार रैंकिंग में स्थान दिया गया है, जो इस वर्ष किसी भी देश के लिए सर्वाधिक है।

12 आईआईटी शामिल हैं इसमें

जिनमें आईआईटी दिल्ली विश्व स्तर पर 123वें स्थान पर है।

विश्वस्तरीय शिक्षा पर जोर

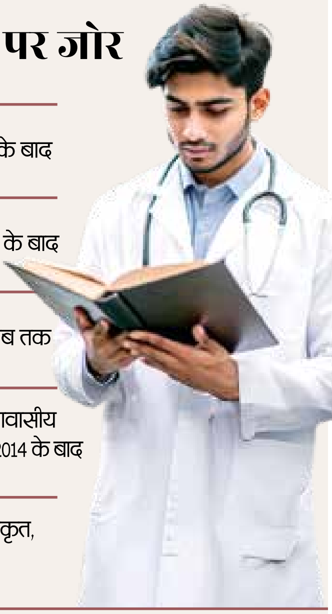

आईआईटी

7 नए आईआईटी खोले गए 2014 के बाद

आईआईएम

8 नए आईआईएम खोले गए 2014 के बाद

एम्स

13 नए एम्स खोले गए 2014 से अब तक

आवासीय विद्यालय

354 नए एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय शुरू किए गए 2014 के बाद

मेडिकल कॉलेज

157 नए मेडिकल कॉलेज स्वीकृत, 131 किए जा चुके हैं शुरू

स्कूल

14,500 प्रधानमंत्री स्कूल ऑफ राइजिंग इंडिया, पीएम श्री स्कूल अनुकरणीय स्कूलों के रूप में विकसित होंगे

एक दशक में करीब दोगुना हुई एमबीबीएस सीट

वर्ष	कॉलेज	एमबीबीएस सीट
2014	404	54,348
2025	780	1,18,190

एक दशक में बढ़ गए 558 विश्वविद्यालय

2014-15: 760

जून, 2025: 1,338

उच्च शिक्षा संस्थान करीब 35 फीसदी बढ़े

2014-15: 51,534

2024-25: 70,018

डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहन

पीएम ई विद्या से ऑनलाइन शिक्षा सुविधा की पहल

377 एनसीईआरटी पुस्तकों का डिजिटलीकरण और ई-पाठशाला मोबाइल एप पर उपलब्धता

क्यूआर कोड वाली पाठ्य पुस्तकें सभी ग्रेड पर उपलब्ध

स्वयं प्रभा टीवी चैनलों पर 24X7 शिक्षा सामग्री का प्रसारण

दीक्षा प्लेटफॉर्म

शिक्षकों को ऑनलाइन प्रशिक्षण

12 मॉड्यूल बनाए गए निष्ठा 3.0 में

2.40 लाख शिक्षक प्रशिक्षित

33 भाषा में गुणवत्तापूर्ण ई सामग्री उपलब्ध है

उच्चतर शिक्षा के लिए किए गए सुधार

- राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क की शुरुआत।
- राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा योग्यता फ्रेमवर्क।
- अंडर ग्रेज्युएट प्रोग्राम के लिए पाठ्यक्रम और क्रेडिट फ्रेमवर्क।
- उच्चतर शिक्षा संस्थानों के शैक्षणिक कार्यक्रम में मल्टीपल प्रवेश।
- उच्चतर शिक्षा संस्थानों को बहु-विषयक संस्थान में बदलना।
- एक साथ दो शैक्षणिक कार्यक्रम को संचालित करना।
- प्रत्येक छात्र की स्वचालित स्थायी एकेडमिक खाता रजिस्ट्री जो प्री-प्राइमरी से उच्चतर शिक्षा तक उनकी शैक्षणिक यात्रा और उपलब्धियों को ट्रैक करने के लिए आजीवन पहचान के रूप में कार्य करेगी।
- मेधावी छात्रों को वित्तीय सहायता के लिए पीएम-विद्यालक्ष्मी योजना की शुरुआत।
- स्वयं प्लेटफॉर्म का उपयोग करके नियमित पाठ्यक्रमों में 40 फीसदी क्रेडिट की अनुमति देना।
- स्किलिंग, अपस्किलिंग और रीस्किलिंग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नए स्वयं प्लस पोर्टल का शुभारंभ।
- समर्थ के माध्यम से प्रवेश से लेकर डिग्री प्रदान करने तक उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रशासन में टेक्नोलॉजी का एकीकरण।
- एक शैक्षणिक वर्ष में दो प्रवेश चक्र की उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों को अनुमति देना।
- शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करना।

शिक्षा का रास्ता नहीं रोकेगी फंड की कमी

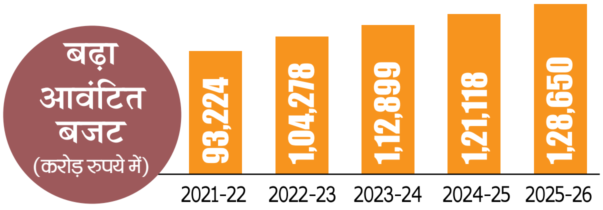

स्कूल में बढ़ीं सुविधाएं, घटी ड्रॉपआउट दर

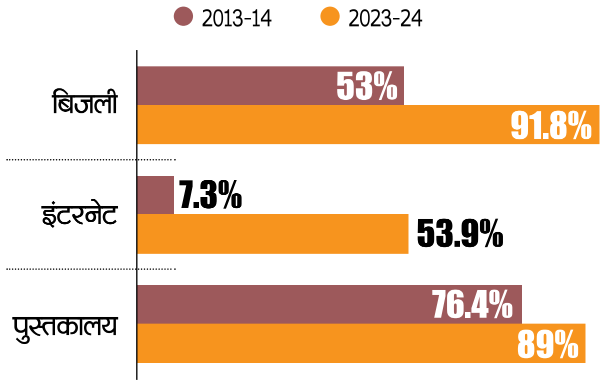

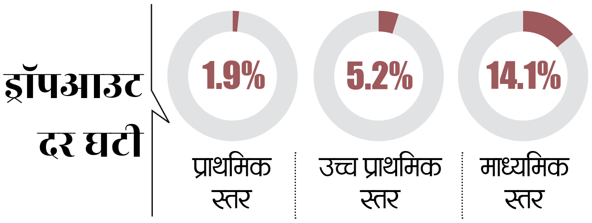

एक दशक में 16 गुना बढ़े व्यवसायिक शिक्षा देने वाले स्कूल

छात्रों की संख्या हो गई 52 गुना से भी ज्यादा

वर्ष	स्कूल संख्या	छात्रों की संख्या
2014-15	1850	58,720
2024-25*	29,342	30,87,928

*(सितंबर 2024 तक)

तनावमुक्त शिक्षा

सीबीएसई की 10वीं बोर्ड परीक्षा अब साल में दो बार

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पैरा 4.37 और 4.38 में बोर्ड परीक्षा में बहुत कुछ दांव पर लगे होने या भारी जोखिम के भाव से छात्रों को सहज करने की सिफारिश की गई थी।
- उसी को ध्यान में रखकर सीबीएसई ने छात्रों को 2026 से एक शैक्षणिक वर्ष में दो बार 10वीं की परीक्षा देने की अनुमति दे दी है।
- पहली परीक्षा फरवरी के मध्य में ही शुरू होगी, परिणाम अप्रैल में आएगा। दूसरी परीक्षा मई में होगी, परिणाम जून में घोषित होगा। अंक तलिका में बेहतर प्रदर्शन वाली परीक्षा के अंक दर्ज होंगे।
- पहली मुख्य परीक्षा होगी, जिसमें सभी छात्रों का शामिल होना अनिवार्य होगा। वहीं, दूसरी परीक्षा में सभी उत्तीर्ण या पात्र छात्रों को विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान और भाषा में से किसी तीन विषय में अपना प्रदर्शन सुधारने की अनुमति होगी।
- यदि कोई छात्र पहली परीक्षा में 3 या अधिक विषयों में शामिल नहीं हुआ है तो उसे दूसरी परीक्षा की अनुमति नहीं दी जाएगी। दोनों परीक्षाएं वर्ष के लिए निर्धारित पूर्ण पाठ्यक्रम पर आयोजित की जाएंगी।
- सीबीएसई के अनुसार जिन छात्रों की पहली परीक्षा में कंपार्टमेंट होगी, उन्हें दूसरी परीक्षा में इसी श्रेणी में परीक्षा की अनुमति होगी।
- अगर आप खेल के छात्र हैं तो दूसरी परीक्षा में उन विषयों में बैठने की अनुमति होगी जिनकी परीक्षाएं आपके खेल आयोजन के साथ मेल खाती होंगी। आंतरिक मूल्यांकन मुख्य परीक्षा से पहले केवल एक बार किया जाएगा।

अब स्कूल में ही कौशल से युक्त हो रहे हैं छात्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप माध्यमिक स्तर यानी नौंवी और दसवीं में एक अतिरिक्त विषय के रूप में कौशल मॉड्यूल उपलब्ध कराया जा रहा है, जबकि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर यानी 11वीं और 12वीं कक्षा में कौशल पाठ्यक्रम अनिवार्य विषय के रूप में संचालित किए जा रहे हैं। राज्य व केंद्र शासित प्रदेशों में फरवरी, 2025 तक 138 जॉब रोल यानी कौशल विषयों को मंजूरी दी गई है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 भी स्कूली शिक्षा में कार्यांवित की जा रही है।

PMO India
@PMOIndia

भारत सेवा प्रधान देश है।

भारत मानवता प्रधान देश है: PM @narendramodi

Rajnath Singh
@rajnathsingh

Held talks with Admiral Don Jun, the Defence Minister of China, on the sidelines of SCO Defence Ministers' Meeting in Qingdao. We had a constructive and forward looking exchange of views on issues pertaining to bilateral relations.

Expressed my happiness on restarting of the Kailash Mansarovar Yatra after a gap of nearly six years. It is incumbent on both the sides to maintain this positive momentum and avoid adding new complexities in the bilateral relationship.

Amit Shah
@AmitShah

मोदी सरकार राज्यों को साथ लेकर निरंतर सहकारी क्षेत्र को उन्नति और समृद्धि की ओर ले जा रही है। आज नई दिल्ली में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के सहकारिता मंत्रियों के साथ सहकारिता क्षेत्र की प्रगति और विकास पर मंथन बैठक की।
केंद्र सरकार जल्द ही राष्ट्रीय सहकारिता नीति की घोषणा करने वाली है। हर राज्य राष्ट्रीय नीति के तहत स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द सहकारिता नीति बनाए। साथ ही, त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय से जुड़कर सहकारी प्रशिक्षण को भी बढ़ावा दें।

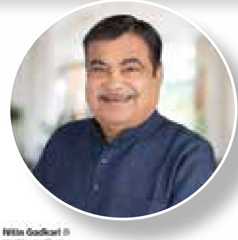

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari

Union Cabinet, chaired by Prime Minister Shri @narendramodi Ji, has approved the establishment of the International Potato Center (CIP) South Asia Regional Centre at Singna, Agra, Uttar Pradesh. This strategic initiative aims to boost food and nutritional security, enhance farmers' incomes, and create rural employment.
By improving potato and sweet potato productivity, strengthening post-harvest systems, and promoting value addition, the Centre will also drive agricultural innovation, capacity building, and technology transfer, advancing India's leadership in sustainable, climate-resilient tuber crop cultivation across South Asia.

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

आज़ादी के बाद भारतीय लोकतंत्र पर सबसे बड़ा हमला 25 जून 1975 को हुआ था, जब सत्ता के स्वार्थ में डूबी तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने देश पर आपातकाल थोपा था। लाखों देशवासी ने लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए उस अंधकारपूर्ण कालखंड में जो पीड़ा और यातनाएं झेली, वह इतिहास का एक अमिट अध्याय है।
आज आपातकाल के 50 वर्ष होने पर आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के नेतृत्व में केंद्रीय कैबिनेट ने उन वीर लोकतंत्र सेनानियों और उनके परिवारों के संघर्ष, त्याग और समर्पण को सम्मान देने का एक ऐतिहासिक संकल्प पारित किया है। यह न केवल लोकतंत्र की मजबूती का प्रतीक है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को तानाशाही प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष और संविधान की रक्षा की प्रेरणा देता रहेगा। मैं उन सभी लोकतंत्र प्रहरियों को कृतज्ञता और विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। pib.gov.in/

Arjun Ram Meghwal
@arjunrammeghwal

ये है नए भारत की ताकत, Digital India की ताकत!

- आज UPI से लेकर DBT तक,
- Cashless से लेकर paperless तक,
- Documentation से लेकर vaccination तक,
- Startup से लेकर JAM तक,
- e-NAM से लेकर 'वन नेशन, वन राशन कार्ड' तक...

आज सब कुछ हो जाता है fingertips पर।

आईएसएस से पीएम से वार्ता 18 मिनट 25 सेकंड तक हुई बात

अंतरिक्ष से शुभांशु ने पीएम को कॉल की; कहा- यहां से भारत ज्यादा भव्य

एजेंसी | नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर शनिवार को 'भारत माता की जय' के नारे गूंजे, जब पीएम नरेंद्र मोदी ने वहां मौजूद भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला से वीडियो कॉल पर 18 मिनट 25 सेकंड तक बातचीत की। लखनऊ में जन्मे शुभांशु इस समय पृथ्वी से 400 किमी ऊपर अंतरिक्ष स्टेशन पर हैं। उन्होंने पीएम मोदी से कहा कि यह यात्रा सिर्फ उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि पूरे देश की सामूहिक सफलता है। 'जब मैंने पहली बार अंतरिक्ष से भारत को देखा, तो वह नक्शे से कहीं ज्यादा विशाल और भव्य नजर आया।' बातचीत के दौरान पीएम मोदी ने शुक्ला से कई सवाल किए, पेश हैं इस बातचीत के प्रमुख अंश...

पीएम मोदी: आप गाजर का हलवा लेकर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन गए हैं। क्या आपने अपने साथियों को खिलाया?

शुभांशु शुक्ला: हां, सभी साथियों के साथ बैठकर खाया।

पीएम: आपको पृथ्वी की परिक्रमा का मौका मिला, कैसा लगा?

शुभांशु: हम 16 बार परिक्रमा करते हैं, 16 सूर्योदय और 16 सूर्यास्त देखते हैं। 28 हजार किमी/घंटे की रफ्तार से चलते हैं। यह गति दिखाती है कि हमारा देश कितनी गति से आगे चल रहा है।

पीएम: मेरी जब भी किसी से बात होती है, तो मैं होमवर्क जरूर देता हूं। हमें मिशन गगनयान को आगे बढ़ाना है, खुद का स्पेस स्टेशन बनाना है। चंद्रमा पर भारतीय एस्ट्रोनॉट की लैंडिंग करानी है। इन सारे मिशन में आपके अनुभव बहुत काम आने वाले हैं।

शुभांशु: जी बिल्कुल, इस पूरे मिशन की ट्रेनिंग के दौरान और एक्सपीरियंस के दौरान, मुझे जो सीख मिली है, वो सब एक स्पंज की तरह एब्जॉर्ब कर रहा हूं। जब मैं वापस आऊंगा, तो हम इन्हें इफेक्टिवली अपने मिशंस में अप्लाई कर सकेंगे।

'कनाडा-भारत जल्द करेंगे उच्चायुक्तों की नियुक्ति'

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को कहा कि जल्द ही कनाडा और भारत उच्चायुक्तों की नियुक्ति करेंगे। भारत और कनाडा के बीच संबंधों के सामान्य होने और उच्चायुक्तों की नियुक्ति को लेकर पूछे गए सवाल को लेकर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने हाल ही में कनाडा में जी 7 समिट के दौरान दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की मुलाकात का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि दोनों राष्ट्राध्यक्षों के बीच अच्छी बातचीत हुई थी। दोनों ने द्विपक्षीय संबंधों को लेकर बात की और चर्चा सकारात्मक हुई। दोनों के बीच तय हुआ कि दोनों ही देशों में उच्चायुक्तों की जल्द नियुक्ति होगी, जिस पर काम चल रहा है। वहीं अलगाववादी समर्थक हरदीप सिंह के कोर्ट केस से जुड़े सवाल पर जायसवाल ने कहा कि ये केस न्यायिक प्रक्रिया का हिस्सा है। लेकिन जहां तक कनाडा और भारत के संबंधों की बात है तो दोनों पक्षों में संतुलित पार्टनरशिप की बात की है। बीते दिनों ईरान और इस्राइल के बीच हालिया संघर्ष को लेकर चलाए गए ऑपरेशन सिंधु के बारे में जानकारी देते हुए जायसवाल ने कहा कि इसके तहत दोनों ही देशों से भारत के लोगों को वापस लाया गया।

जायसवाल बोले, समिट में दोनों ने द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कनाडा के पीएम मार्क कार्नी के साथ।

हिंद-प्रशांत में हमारा महत्वपूर्ण सहयोगी है भारत : अमेरिका

भारत की सेवा भावना किसी भी शर्त और स्वार्थ से परे : पीएम मोदी

प्रधानमंत्री बोले, भारत सेवा से परिभाषित और मानवता से निर्देशित राष्ट्र

अमर उजाला ब्यूरो

ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते ही बजने लगीं तालियां

देश को गुलामी की मानसिकता से मुक्त कराने के लिए सरकार ने लिए 9 संकल्प

आचार्य विद्यानंद ने 50 से अधिक ग्रंथ लिखे

राष्ट्रीय प्रसारण दिवस - 23 जुलाई

जीवन का हिस्सा रेडियो

रेडियो एक ऐसा उपकरण है जो देश में खबरों के साथ-साथ आसानी से मनोरंजन का माध्यम बना है। वर्ष 1927 में 23 जुलाई को देश में पहली बार बम्बई स्टेशन से इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी ने संगठित रूप से रेडियो प्रसारण की शुरुआत की, तभी से 23 जुलाई को राष्ट्रीय प्रसारण दिवस के तौर पर मनाने की शुरुआत हुई। रेडियो भारत में न सिर्फ आम जनता के जीवन का हिस्सा रहा बल्कि हर दौर में इसका अलग महत्व रहा है। देशवासियों से सीधे जुड़ने और रेडिया की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के लिए भी इस टिकाऊ और पसंदीदा माध्यम को चुना...

...यह आकाशवाणी है

- आकाशवाणी देश के 92 प्रतिशत भू-भाग और 99 प्रतिशत से अधिक लोगों को कवर करती है।
- आकाशवाणी 591 स्टेशन का संचालन करता है। यह 23 भाषा और 146 बोली में प्रसारण करता है।
- आकाशवाणी का एक्सटर्नल सर्विस डिवीजन 100 से अधिक देश में प्रसारण करता है।
- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 28 अगस्त 2024 को निजी एफएम रेडियो चरण-3 नीति के अंतर्गत 234 नए शहर में 730 चैनल शुरू करने की मंजूरी दी।

न्यू इंडिया समाचार पाक्षिक

आर.एन.आई, DELHIN/2020/78812, 16-31 जुलाई, 2025

आरएनआई DELHIN/2020/78812, दिल्ली पोस्टल लाइसेंस नंबर- DL (S)-1/3550/2023-25 डब्ल्यूपीपी संख्या- U (S)-98/2023-25, posting at BPC, Market Road, New Delhi - 110001 on 13-17 advance Fortnightly (प्रकाशन तिथि- 2 जुलाई 2025, कुल पृष्ठ-56)

प्रधान संपादक: धीरेन्द्र ओझा, प्रधान महानिदेशक, पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

प्रकाशक और मुद्रक: कंचन प्रसाद, महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो

कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना भवन, द्वितीय तल, नई दिल्ली- 110003 से प्रकाशित

मुद्रण: जेके ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा. लि., बी-278, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज-1, नई दिल्ली-110020